भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 323 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 08 दिसम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

विजय मार्च निकाल आज आंदोलन खत्म करेंगे किसान

नई दिल्ली। बीते एक साल से ज्यादा वक्त से चला आ रहा किसान आंदोलन बुधवार को समाप्त हो सकता है। मंगलवार को सिंघु बॉर्डर पर संयुक्त किसान मोर्चा की बैठक में इसे लेकर संकेत मिले हैं। केंद्र सरकार की ओर से लंबित मुद्दों के समाधान के लिए ड्राफ्ट सौंपे जाने के बाद इस पर सहमति बनती दिखी है। आंदोलन कर रहे किसानों की मुख्य मांगें तीनों कानूनों को वापस लेने की थी। केंद्र सरकार ने उनकी मांगों को मानते हुए तीनों कानूनों को संसद के जरिए वापस ले लिया। इसके अलावा भी किसानों की कई मांगें लंबित थे। उनमें आंदोलन के दौरान दर्ज मामलों को वापस लेने और एमएसपी पर गारंटी देने की मांग प्रमुख थी। अब केंद्र सरकार की ओर से किसानों को एक ड्राफ्ट भेजा गया है। इस ड्राफ्ट में सरकार ने पराली जलाने पर आपराधिक धाराएं खत्म करने की बात कही है। इसके अलावा हरियाणा और यूपी में किसान आंदोलन के दौरान दर्ज हुए सभी मामले वापस होंगे। दोनों राज्यों की सरकारों ने इस पर सहमति जताई है। यही नहीं केंद्र और केंद्र शासित प्रदेशों में भी किसानों पर दर्ज सभी केस वापस होंगे। केंद्र सरकार के इस रुख के बाद ही किसान आंदोलन समाप्त करने का फैसला ले सकते हैं। यही नहीं 8 दिसंबर को किसानों की ओर से विक्ट्री मार्च भी निकाला जा सकता है।आपको बता दें कि संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने 4 दिसंबर को सभी विरोध करने वाले किसानों की ओर से सरकार के साथ बातचीत करने के लिए अधिकार प्राप्त समिति का हिस्सा बनने के लिए पांच लोगों का चयन किया। केंद्र सरकार द्वारा तीन विवादास्पद कृषि कानूनों को निरस्त करने की प्रमुख मांग को स्वीकार किए जाने के बाद भी किसानों के मुद्दों पर केंद्र के साथ चर्चा करने के लिए इस समिति का गठन किया गया था। इस बीच संयुक्त किसान मोर्चा की सिंघु बॉर्डर पर चल रही मीटिंग समाप्त हो गई है, लेकिन फिलहाल कोई ऐलान नहीं किया गया है। किसान नेताओं ने कहा कि सरकार की ओर से भेजे गए कुछ प्रस्तावों पर स्पष्टीकरण की जरूरत है। मीटिंग में सभी प्रस्तावों पर लंबी चर्चा हुई है। अब कल यानी 8 दिसंबर को दोपहर 2 बजे फिर मीटिंग बुलाई जाएगी। जिन बिंदुओं पर हमें स्पष्टीकरण की जरूरत है, उसे लेकर सरकार से बात की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के विरोध के कारण दिल्ली से नोएडा के बीच सड़कों की नाकेबंदी के खिलाफ एक याचिका पर सुनवाई जनवरी 2022 तक के लिए टाल दी है। जस्टिस संजय किशन कौल की अध्यक्षता वाली बेंच ने केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता के अनुरोध पर मामले को स्थगित कर दिया, जिन्होंने कहा कि उन्हें ₹हालिया घटनाक्रम₹ (तीन कृषि कानूनों को निरस्त) के मद्देनजर निर्देश लेने की जरूरत है।

किसान आंदोलन खत्म करने में देर नहीं लगेगी... राकेश टिकैत ने भी दिए घर वापसी के संकेत

नई दिल्ली। तीनों कृषि कानूनों के खिलाफ करीब एक साल पहले धरने पर बैठे किसान अब वापस अपने घर जा सकते हैं। केंद्र सरकार ने हाल ही में तीनों कानून वापस ले लिए। आज उन्हें एक मसौदा भेजा गया है, जिसमें उनकी कुछ मांगों को सरकार ने मंजूर कर लिया है। उनमें एमसपी गारंटी कानून और आंदोलन के दौरान किसानों के खिलाफ दर्ज मामले वापस लेने की मांग प्रमुख थी। आज किसान नेता राकेश टिकैत ने कहा, "सरकार ने प्रस्ताव दिया कि वे हमारी मांगों पर सहमत होंगे और हमें विरोध समाप्त कर देना चाहिए। लेकिन प्रस्ताव स्पष्ट नहीं है। हमें आशंका है, जिस पर कल दोपहर 2 बजे चर्चा होगी। हमारा आंदोलन कहीं नहीं जा रहा है। यहीं रहेगा। राकेश टिकैत ने यह भी कहा है कि सरकार यह भी स्पष्ट कर दे कि आखिर एमएसपी पर बनने वाली कमिटी में कौन-कौन लोग होंगे। उन्होंने कहा, "पीएम नरेंद्र मोदी के ऐलान के बाद ही मामला समाधान की ओर बढ़ चुका था।

पश्चिम बंगालः सरकारी दफ्तर में पिस्टल दिखाती नजर आईं तृणमूल नेता

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में एक सरकारी कार्यालय में एक टीएमसी नेती की बंदूक के साथ पोज देते हुए एक कथित तस्वीर वायरल होने के बाद नया विवाद खड़ा हो गया है। बंदूक के साथ टीएमसी नेता की फोटो को लेकर विपक्षी पार्टी बीजेपी ने इसे कानून-व्यवस्था की विफलता और टीएमसी की संस्कृति करार दिया है। बंदूक के साथ तस्वीर वायरल हुई है वो टीएमसी की महिला मंडल की वरिष्ठ नेता और ओल्ड मालदा पंचायत समिति अध्यक्ष मृणालिनी मंडल मैती की बताई जा रही है। मैती कथित फोटो में एक कुर्सी पर बैठी हैं और उनके हाथ में एक बंदूक दिख रहा है। मैती की पिस्टल वाली यह तस्वीर बीडीओ कार्यालय के अंदर की बताई जा रही है। मैती की बंदूक के साथ तस्वीर वायरल होने के बाद राजनीति भी गर्म हो गई। बीजेपी ने इस मामले की जांच की मांग की है। वहीं, इस घटना की निंदा करते हुए, टीएमसी के मालदा जिले के महासचिव कृष्णेंदु नारायण चौधरी ने कहा कि उन्हें लगता है कि यह नेता की छवि को नुकसान पहुंचा रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि यह एक असली बंदूक है।

उन्होंने आगे कहा कि पुलिस की ओर से इसकी जांच होनी चाहिए कि यह खिलौना है या फिर असली बंदूक है। हालांकि, मेरा अनुभव कहता है कि यह एक असली हथियार है। इससे नेता की छवि खराब हो रही है। चौधरी ने कहा कि घटना की जांच की मांग कर रहे हैं। एक दिन पहले ही राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मालदा और मुर्शिदाबाद में एक प्रशासनिक बैठक में भाग लेने पहुंची थीं। इस पूरे मामले पर मालदा के एक स्थानीय भाजपा नेता ने कहा कहा कि यह तृणमूल की संस्कृति है। अगर पुलिस जांच की जाती है तो उन्हें पिस्टल के अलावा भी बहुत कुछ मिलेगा। उन्होंने कहा कि इन लोगों के पास बंदूके, बम और यहां तक कि एक-47 भी मिल जाएंगी। मुझे यकीन है कि ममता बनर्जी ने भी इस तस्वीर को देखी होंगी, लेकिन वह कोई कार्रवाई नहीं करेंगी।

प्रियंका ने अखिलेश को बताया ज्योतिषी, बोलीं-

हमने महिलाओं के लिए बनाया अलग घोषणा पत्र

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दल मतदाताओं को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। इसी बीच कांग्रेस महासचिव और उत्तर प्रदेश पार्टी प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा ने मंगलवार को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश चुनाव को लेकर कांग्रेस कार्यकताओं के साथ 2 बैठकें हुई हैं। अखिलेश यादव ज्योतिषी हो सकते हैं कि कि उन्हें लगता है कि कांग्रेस को 0 सीटें मिलेंगी। दरअसल, सपा प्रमुख ने कहा था कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिलेगी। एक समाचार के मुताबिक कांग्रेस महासचिव ने कहा कि हमने महिलाओं के लिए अलग से एक घोषणा पत्र बनाया है, हम महिलाओं के लिए जो करना चाहते हैं वो उस घोषणा पत्र में होगा। हम कल इस घोषणा पत्र को जारी करेंगे। इससे पहले प्रियंका गांधी ने बताया था कि आगामी चुनाव के लिए तैयार किए जा रहे पार्टी घोषणा पत्र में युवाओं, किसानों, महिलाओं, व्यापारियों, वंचित वर्ग एवं सभी तबके के लोगों का विशेष ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने कहा था कि उत्तर प्रदेश कांग्रेस का घोषणा पत्र प्रदेश की प्रगति का रास्ता तैयार करने वाला दस्तावेज होगा।

राहुल गांधी से मिले संजय राउत, कहा- कांग्रेस के बिना विपक्ष का कोई फ्रंट संभव नहीं

नई दिल्ली। शिवसेना नेता और राज्यसभा सांसद संजय राउत ने आज कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की है। यह मुलाकात ऐसे समय में हुई जब ममता बनर्जी ने यूपीए के अस्तित्व पर ही सवाल उठा दिया था। राहुल गांधी से मुलाकात के बाद संजय राउत ने साफ तौर पर कहा कि कांग्रेस के बिना कोई भी फ्रंट संभव नहीं है। अपने बयान में संजय रावत ने कहा कि राजनीति पर राहुल गांधी के साथ लंबी चर्चा हुई। एकजुट होकर विपक्ष को किस प्रकार आगे रखना है और अगर विपक्ष का कोई एक फ्रंट बनेगा तो वो कांग्रेस के बिना संभव नहीं है इसपर भी चर्चा हुई।संजय राउत से जब पूछा गया कि क्या शिवसेना यूपीए में शामिल होगी इस सवाल पर उन्होंने कहा कि यह एक लंबी बैठक थी (कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ), मैं पहले उद्धव ठाकरे से मिलूंगा और फिर हम इसके बारे में बात करेंगे। वर्तमान में देखे तो ममता बनर्जी लगातार विपक्ष के नेताओं से मिल रही हैं। परंतु कांग्रेस पर वह जबरदस्त तरीके से हमलावर है। यही कारण है कि बार-बार इस बात के कयास लग रहे हैं कि ममता बनर्जी कांग्रेस के बिना कोई नया फ्रंट बनाने की तैयारी कर रही है। हाल में ही ममता बनर्जी मुंबई गई थीं जहां उन्होंने शरद पवार से मुलाकात की थी। शिवसेना नेता आदित्य ठाकरे से भी ममता बनर्जी की मुलाकात हुई थीं मुंबई में ही ममता बनर्जी ने राहुल गांधी पर भी निशाना साधा था और कहा था कि उन्हें देश में रहने की जरूरत है। इससे पहले शिवसेना सांसद संजय राउत ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कांग्रेस के बिना गठबंधन पर विचार कर रही हैं। राउत ने दावा किया कि बनर्जी ने कहा है कि उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) महाराष्ट्र में सियासी आजमाइश नहीं करेगी। उन्होंने यह भी दावा किया कि कुछ दिन पहले यहां शिवसेना नेता एवं राज्य मंत्री आदित्य ठाकरे से मुलाकात के दौरान बनर्जी ने कहा था कि हम यहां नहीं आएंगे क्योंकि शिवसेना और राकांपा मजबूत हैं।

कांग्रेसः आज होगी संसदीय दल की बैठक, पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी करेंगी संबोधित

नई दिल्ली। कांग्रेस के संसदीय दल की बैठक बुधवार को संसद में आयोजित होगी। पार्टी सूत्रों ने बताया कि पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी इस बैठक को संबोधित करेंगी। बैठक की शुरूआत संसद के सेंट्रल हॉल में सुबह 9.30 बजे शुरू होगी। इसमें कांग्रेस पार्टी के सभी लोकसभा और राज्यसभा के सांसद हिस्सा लेंगे। सूत्रों ने बताया कि पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी भी इस बैठक में मौजूद रहेंगे। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल 12 सांसदों को संसद के वर्तमान में चल रहे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित करने के आदेश को रद्द करने की मांग कर रही है। इन सांसदों पर अनुशासनहीनता के लिए कार्रवाई की गई है।

महबूबा मुफ्ती बोलीं

ऐसा लगता है जैसे गांधी का भारत गोडसे के भारत में बदल रहा है

नई दिल्ली। अनुच्छेद 370 हटने के बाद पीडीपी की अध्यक्ष और जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती लगातार मोदी सरकार पर हमलावर हैं। इसी कड़ी में एक बार फिर से महबूबा मुफ्ती ने सरकार पर बड़ा हमला किया है। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि ऐसा लगता है कि गांधी का भारत अब गोडसे का भारत बन गया है। दरअसल, महबूबा मुफ्ती ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में भारत और पाकिस्तान के बीच एक क्रिकेट मैच याद है, जहां पाक के नागरिक भारत के लिए जयकार कर रहे थे और भारत के नागरिक पाकिस्तान के लिए जयकार कर रहे थे। और पाक के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने भी की तत्कालीन भारतीय कप्तान एमएस धोनी की तारीफ की थी।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले भारत-पाकिस्तान मैच के दौरान आगरा में जब कुछ युवाओं ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम की जय-जयकार की तो उनके पक्ष में एक वकील तक बोलने को तैयार नहीं हुआ। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि लगता है कि गांधी का भारत अब गोडसे का भारत बनता जा रहा है। आपको बता दे कि टी-20 विश्वकप में भारत और पाकिस्तान के बीच मैच हुआ था जिसमें टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा था।

भारत की हार के बावजूद भी देश के कई हिस्सों में जश्न मनाया गया था। उत्तर प्रदेश में भी जश्न की जो खबरें आई, इसी कड़ी में कई जगहों पर जश्न मनाने वालों के खिलाफ उत्तर प्रदेश पुलिस ने मामले दर्ज किए।

इससे पहले महबूबा मुफ्ती ने सोमवार को दिल्ली के जंतर मंतर पर धरना दिया और मांग की कि केंद्र शासित प्रदेश में लोगों को कथित रूप से दबाना और बेगुनाह नागरिकों की हत्या फौरन बंद की जाए। उन्होंने कहा कि वह जब भी विरोध प्रदर्शन करना चाहती थीं, तो या उन्हें घर में नजरबंद कर दिया जाता था या पुलिस उन्हें ले जाती थी। जंतर मंतर पर धरने में पीडीपी के सैकड़ों कार्यकताओं ने हिस्सा लिया। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में आरोप लगाया, ह्लकश्मीर एक ऐसी जेल बन गई है, जहां लोगों को अपनी राय रखने की इजाजत नहीं है। अगस्त 2019 से उनका (लोगों का) दमन किया जा रहा है और मुझे हैरानी है कि सरकार कुछ पेड (पैसा लेने वाले) मीडिया की मदद से घाटी में सब कुछ ठीक-ठाक दिखाने में मसरूफ है।

जब तक कश्मीर में धारा-370 बहाल नहीं हो जाती, मैं चुनाव नहीं लड़ूंगी... महबूबा मुफ्ती ने खाई कसम

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने चुनाव नहीं लड़ने की कसम खाई है। उन्होंने कहा कि बेशक, हम चुनाव लड़ने जा रहे रहैं, हम उन्हें कोई जगह नहें देंगे, लेकिन मैं तब तक चुनाव नहीं लड़ूंगी, जब तक कि कश्मीर में फिर से घारा-370 बहाल नहीं हो जाती है। इससे पहले महबूबा मुफ्ती ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर हमला करते हुए कहा, "ऐसा लगता है कि गांधी का भारत गोडसे का भारत बन गया है।₹ पीडीपी प्रमुख ने अपनी दलील को साबित करने के लिए भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच का सहारा लिया। मुफ्ती ने कहा, "मुझे वाजपेयी जी के दौर में भारत और पाकिस्तान के बीच एक क्रिकेट मैच याद है, जहां पाक के नागरिक भारत के लिए जयकार कर रहे थे और भारत के नागरिक पाकिस्तान के लिए जयकार कर रहे थे। पाक के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने भी की तत्कालीन भारतीय कप्तान एमएस धोनी की तारीफ की थी। मुफ्ती ने आगे कहा, "कुछ दिन पहले आगरा में जब भारत के साथ मैच के दौरान कुछ युवाओं ने पाकिस्तानी क्रिकेट टीम की जय-जयकार की तो एक भी वकील उनका पक्ष लेने को तैयार नहीं हुआ।

नागालैंड से एएफएसपीए खत्म करने की मांग, मुख्यमंत्री रियो बोले-

भारत जैसे लोकतंत्र में सेना की ज्यादती ठीक नहीं है

नईदिल्ली। नागालैंड में पिछले दिनों हुई गोलीबारी की घटना के बाद मंगलवार को राज्य की कैबिनेट मैं सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियमह्न (अऋढअ) को हटाने को लेकर सहमति बनी। कैबिनेट ने इस मुद्दे पर भारत सरकार को पत्र लिखने का फैसला किया है। राज्य कैबिनेट की बैठक के बाद नागालैंड के मुख्यमंत्री नेफियू रियो ने कहा कि भारत जैसे लोकतंत्र में सेना की ज्यादती ठीक नहीं है। मुख्यमंत्री नेफियू रियो ने कहा 'सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम के जरिए सुरक्षा बलों की ओर से की गई ज्यादती भारत जैसे लोकतांत्रिक देस में लोगों के लिए ठीक नहीं है। यह अच्छी बात है कि उन्होंने (केंद्र) टिप के माध्यम से गलत निर्णय लेने की बात स्वीकार की... उम्मीद है कि न्याय होगा।

नागालैंड के मोन जिले में गोलीबारी की घटना पर मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि लोगों ने इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को लेकर बहुत जोरदार तरीक से बात की है। आज की राज्य कैबिनेट की बैठक में, हमने भारत सरकार से न केवल नागालैंड में बल्कि पूर्वोत्तर के सभी जगहों से अफस्पा को निरस्त करने के लिए कहने का फैसला किया है। राज्य के मोन जिले में शनिवार को एक विफल उग्रवाद विरोधी अभियान और जवाबी हिंसा में सुरक्षा बलों की गोलीबारी में कम से कम 14 आम नागरिकों और एक सैनिक की मौत हो गई थी। गोलीबारी की घटना के बाद मोन जिले में स्थिति नियंत्रण में जरूर है लेकिन तनावपूर्ण है। मौजूदा स्थिति को देखते हुए मोन जिले में इंटरनेट, व्हाट्सऐप और एक साथ की एसएमएस भेजने पर रोक लगा दी गई है।

खबर संक्षेप

छः वारंटी अभियुक्त हुए गिरफ्तार

सहसों। प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश अभियान के तहत थरवई पुलिस ने उप निरीक्षक चंदन सरोज, हेड कांस्टेबल राम सिंह व होमगार्ड पीसी रामकिशोर की टीम ने मंगलवार को थाना क्षेत्र में अपराधियों पर अंकुश हेतु दबिश देकर वारंटी लाल बहादुर यादव पुत्र हुबलाल यादव निवासी देवरिया थाना थरवई, दशरथ यादव पुत्र हुबलाल निवासी देवरिया थाना थरवई, अमृत लाल उर्फ सुग्घर पुत्र हुबलाल निवासी देवरिया थाना थरवई, ननके भारती उर्फ रविंद्र कुमार निवासी सिंगरामऊ थाना थरवई, धारा सिंह पुत्र सुखलाल निवासी सिंगरामऊ थाना थरवई, अरविंद कुमार पुत्र लल्लू पासी निवासी सिंगरामऊ थाना थरवई को गिरफ्तार कर थाने में लिखा पढ़ी करते हुए वारंटीओं के विरुद्ध विभिन्न धारा के अंतर्गत मुकदमा पंजीकृत कर न्यायालय के समक्ष पेश किया।

करछना में ट्रक की टक्कर से बाइक सवार दो युवकों की मौत

अखंड भारत संदेस

करछना। थाना क्षेत्र के मिजार्पुर मार्ग पर बीती रात मझुआ गांव निवासी दो युवक एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर हाईवे रोड मिजार्पुर गधियाव के पास ढाबे पर खाना खाने गए थे जहाँ खाना खाने के बाद रात को घर वापस लौटते समय अज्ञात ट्रक की चपेट में आने से दोनों की दर्दनाक मौत हो गई जिसकी सूचना स्थानीय लोगों ने करछना पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतकों को आनन-फानन में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया रात को उनकी पहचान न होने के कारण जेब में मिले परिचय पत्र से पहचान हुई की मृतक प्रदीप कुमार श्रीवास्तव 36 वर्ष तथा शिव कैलाश पटेल 32 वर्ष के रूप में हुई जानकारी होने पर परिजन मौके पर पहुंचे पोस्टमार्टम हाउस तब जाकर पहचान हुई बताया जाता है कि प्रदीप श्रीवास्तव मुंबई में रहकर काम करता है कुछ दिन पूर्व छुट्टी आया था वह विवाहित था उसकी पत्नी और उसके बीच में पारिवारिक न्यायालय में तलाक का मुकदमा चल रहा था उसी सिलसिले में वह तारीख पर उपस्थित होने के लिए घर आया था जहां अपने दोस्त शिव कैलाश के साथ बीती रात ढाबे पर खाना खाने गया था जिसमें दोनों ट्रक की चपेट में आने से हादसे के शिकार हो गए घटना की जानकारी से परिजनों में मातम का माहौल।

ट्रेन से कटकर महिला की मौत

फूलपुर। लकड़ी काटकर रेलवे ट्रैक के किनारे से घर जा रही महिला अचानक ट्रेन की चपेट में आ गई जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के रकबवा निवासी नीतू बिंद 35 पत्नी दीपक बिंद मंगलवार दोपहर लगभग दो बजे फूलपुर रेलवे स्टेशन के फाटक 29 सी के पास से लकड़ी लेकर घर जा रही थी तभी अचानक वह ट्रेन की चपेट में आ गई जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंचे आरपीएफ फूलपुर चौकी इंचार्ज ओम प्रकाश ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भिजवाया।

विवाहिता की संदिग्ध हालत में मौत ससुराली जनों पर हत्या का आरोप

अखंड भारत संदेश

मृतका के पिता ने पति समेत कई के खिलाफ हत्या किए जाने की शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की

पुलिस मौके पर पहुंच जाचपड़ताल कर रही है

घूरपुर। इलाके के कांटी गांव में विवाहिता की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। आसपास के सूचना पर मायके पक्ष पहुंचे और थाने में ससुरालियों पर मारपीट कर हत्या किए जाने का आरोप लगाते हुए थाने में शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

कौंधियारा थाना क्षेत्र के बारी बजैहिया निवासी राकेश सिंह ने अपनी बेटी अंजुला की विवाह घूरपुर के कांटी गांव निवासी राम बिहारी के बेटे ज्ञानेंद्र उर्फ बाबू जी के साथ दो वर्ष पूर्व विवाह किए थे। आरोप है कि शादी के कुछ माह बाद ही दहेज मे बाइक और सोने की जंजीर, अंगूठी की मांग की जानें लगी। नहीं देने पर बेटी को प्रताड़ित किया जाने लगा इस बीच कई बार पंचायत भी हुई लेकिन ससुराल पक्ष नहीं माना।मंगलवार की सायंकाल पास पड़ोस के लोगों ने अंजुला की मौत की खबर मायके पक्ष को दी तो परिजन रोते बिलखते बेटी के ससुराल पहुंचे। वहां पर पहुंचने पर ससुरालियों ने बताया कि सोमवार को अस्पताल में भर्ती थी इलाज के दौरान मंगलवार के दिन मौत हो गई। मौत के बावजूद ससुरालियों ने सूचना नहीं दी। और शव को घर लेकर चले आए तब तक सूचना नहीं दी गई । मायके पक्ष ने आरोप लगाया कि दहेज की मांग पूरी नहीं किए जाने पर सोमवार के दिन बेरहमी से लाठी से पिटाई कर लहुलूहान कर अधमरा कर दिया और उसके बाद उसे इलाज के बहाने अस्पताल ले गए और उसकी हत्या कर दी गई। मृतका के पिता ने पति समेत कई के खिलाफ हत्या किए जाने की शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की। पुलिस मौके पर पहुंच जाचपड़ताल कर रही है।

न्यूज झरोखा

संदिग्ध दशा में लगी आग, खाक हो गई गृहस्थी

शंकरगढ। सोमवार की रात संदिग्ध दशा में लगी आग में दो परिवारों की गृहस्थी जलकर राख हो गई। यह हादसा कैसे हुआ, यह स्पष्ट नहीं हो सका। रात आग लगने की जानकारी होने पर घर के लोगों ने बाहर निकलकर किसी तरह जान बचाई। जब तक आग पर काबू पाया जाता, काफी देर हो चुकी थी।यह हादसा शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम कपारी का है। ग्राम कपारी में स्थित प्राथमिक विद्यालय के पीछे एक बस्ती है। इस बस्ती के रहने वाले कल्लू कोल पुत्र लालजी कोल और राजकली पत्नी स्व. सुंदरलाल कोल का मकान अगल-बगल है।
बताया जाता है कि बीती रात किसी एक मकान में आग लग गई, जब तक लोगों को आग लगने की जानकारी हो पाती, काफी देर हो चुकी थी और झोपड़ीनुमा दोनों मकानों में आग लग चुकी थी। आग लगने की जानकारी होने पर घर के सदस्य शोर मचाते हुए बाहर की तरफ भागे। रात का समय होने के कारण मदद भी समय से नहीं मिल पाई। जब तक आग पर काबू पाया जाता, दोनों के मकान जलकर राख होगए। भुक्तभोगियों ने बताया कि आगजनी की इस घटना में कपड़ा, बिस्तर, चारपाई, खाने -पीने का सामान, नगदी इत्यादि जलकर राख हो गया। भुक्तभोगी परिवारों के पास तन पर बचे कपड़ों के अलावा कुछ भी नहीं बचा है। घटना की सूचना स्थानीय लेखपाल को दी गई है।

मौका परस्त बसपा विधायक ने प्रतापपुर के साथ छल कपट किया : कैप्टन करन सिंह

जंघई। प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी अपनादल भाजपा गठबंधन कैप्टन करन सिंह सोमवार को भेलखा गाँव में जनचौपाल लगाया और कहा कि वर्तमान बसपा विधायक ने क्षेत्रवासियों के साथ छल कपट किया है ऐसे स्वार्थी एवं बाहरी लोगों का पूरी उर्जा से बहिष्कार करें।केंद्र एवं प्रदेश सरकार की उपलब्धियों का बखान करते हुए कहा कि प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र मेरा परिवार है क्षेत्र की सेवा करना मेरा नैतिक अधिकार है।आप लोगो का साथ मेरा प्रयास मिलकर प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र का चहुँमुखी विकास करेंगे। इस अवसर पर ग्राम सभा जनचौपाल कार्यक्रम में अपनादल एस के जोन अध्यक्ष पूर्वी रामआसरे चौहान, सेक्टर अध्यक्ष अमरनाथ चौहान, बीजेपी युवा मोर्चा दसेर मंडल अध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह, नेदुला ग्राम प्रधान अनिल गौतम, भगेलू राम पटेल, प्रमोद कुमार दुबे, पूर्व प्रधान भेलखा प्रेम शंकर गुप्ता, मौजी लाल गुप्ता, मुन्ना सिंह कुणाल चतुर्वेदी, राजकपूर सरोज, विशाल राजपूत, अर्जुन सिंह, सलमान हाशमी, हिमांशु त्रिपाठी, प्रकाश सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

कानूनगो,लेखपाल,भू-माफियाओं सहित चार के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

न्यायालय का चाबुक

राजस्व एवं पुलिस प्रशासन की अनदेखी पर अदालत ने की कार्यवाही

कोरांव में जिन्दा महिला लघु कृषक की भूमि मृतक दिखा कर स्थांतरित करने का मामला

अखंड भारत संदेश

जिंदा साबित करने मृतक मालती पुत्र के साथ गई थी डीएम की चौखट पर

कोरांव। तहसील कोरांव में इन दिनों भू राजस्व में हेरा फेरी किए जाने तथा जिंदा को मुर्दा दिखा कर भू माफियाओं को जमीनें ट्रांसफर कर दिए जाने का मामला बहुतायत में प्रकाश में आ रहा है। साथ ही राजस्व कर्मियों की एक टीम उक्त कारनामें को अंजाम देने तथा सुविधा शुल्क ले कर सीमांकन पैमाइस के नाम पर किसी की जमीन किसी के मकान सरकारी दिखा दर्शा कर धन ऐंठने एवं भू विवाद उत्पन्न करने में सक्रीय है। जिसमे अब गाज गिरनी शुरू हो गई है। तहसील कोरांव कर ग्राम देवघाट महुली निवासिनी मालती देवी पाल पत्नी सुखलाल की जमिन को देवघाट के लेखपाल राजबहादुर सिंह पटेल,ने ग्राम अल्हवा निवासी सुखलाल सिंह पटेल के नाम पिछले वर्ष मृतक दिखा कर ट्रांसफर कर दिया था। मालती देवी ने जिलाधिकारी के सामने जिंदा होने का सबूत स्वयं पेश हो के दिया। और उसी दिन उसकी जमीन वापिस भी जिलाधिकारी ने कराई थी। और एस एस पी से प्रथिमिकी दर्ज किए जाने की मांग की थी किंतु आरोपियों को बचाने का काम होता रहा। जिससे पीड़िता मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रयागराज का दरवाजा खटखटाया। जहां न्यायालय ने थाना कोराव इंस्पेक्टर को मालती देवी बनाम सुखलाल सिंह आदि में धारा 156/3/ के तहत मुकदमा अपराध संख्या 412/2021 धारा 419,420,467,468,471,506,आईपीसी में मुकद्दमा दर्ज कर विवेचना करने का आदेश पारित किया। जहां थाना पुलिस कोराव ने सुखलाल सिंह पटेल पुत्र पन्ना लाल,पवन कुमार पाल पुत्र लालबहादुर कोटेदार अल्हवा,राजबहादुर सिंह पटेल लेखपाल देवघाट,तत्कालीन कानूनगो बड़ोखर राम आसरे के विरुध उपरोक्त धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। समाचार लिखे जाने तक गिरफ्तारी की कोई सूचना नहीं मिली। जिससे भू माफियाओं और उनके सहयोगियों में हरकम्प मचा है।

आप छोड़ सपा मे शामिल अखिलेश बने जिला सचिव, खुशी

मेजा रोड। मेजा विधानसभा क्षेत्र के आम आदमी पार्टी के युवा नेता अखिलेश पाल आम आदमी पार्टी को छोड़कर समाजवादी पार्टी मे शामिल हुए। जिन्हें समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी मे जिला सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई। जिससे क्षेत्रीय सपाइयों मे खुशी का माहौल है। बता दें कि मंगलवार को समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी के जिलाध्यक्ष नवीन यादव व जिला पंचायत सदस्य प्रमिल यादव ने आम आदमी पार्टी से आए अखिलेश पाल का स्वागत करते हुए समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराया और जिलाध्यक्ष नवीन यादव ने अखिलेश पाल को सपा लोहिया वाहिनी का जिला सचिव मनोनीत किया। वहीं मनोनयन पर श्री पाल ने कहा कि पार्टी ने जिस भरोसे पर मुझे जिम्मेदारी दी है उस पर खरा उतरने के साथ साथ समाजवादी नीतियों से लोगों को अवगत कराने के साथ साथ समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए संघर्षरत रहूंगा। इस मौके पर सपा नेता सुरेन्द्र यादव, आकाश कुमार, पिंटू पाल, कमलेश कुमार सहित दर्जनों सपाई मौजूद रहे।

अमृत महोत्सव रथयात्रा के जरिए आधा दर्जन गांव में भारत मां का हुआ पूजन

अखंड भारत संदेश

रथयात्रा गांव पहुंचने पर लोगों ने किया पूजन अर्चन

रत्योरा। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव रथ यात्रा के जरिए मंगलवार को विकासखंड कोरांव के साजी न्याय पंचायत के आधा दर्जन गांवों में भारत मां का पूजन अर्चन कर स्वाधीनता के लिए बलिदान हुए अमर सपूतों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान नन्हे-मुन्ने स्कूली बच्चों को भी स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के बारे में बताते हुए महापुरुषों के जीवनी से भी परिचित कराया गया। रथ यात्रा का प्रतिनिधित्व कर रहे भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह ने ग्रामीण महिला पुरुषों एवं बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि देश को आजाद कराने के लिए न जाने कितने भारत मां के अमर सपूत बलिदान हो गए थे। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन्हें श्रद्धांजलि देने का कार्यक्रम प्रत्येक गांवों में किया जा रहा है। इसी के निमित्त आजादी का अमृत महोत्सव रथ सभी गांवो में पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सदैव याद रखने के लिए रथ यात्रा गांवों में घुमाई जा रही है। जिन गांवों में रथयात्रा घुमाई गई उनमें सेमरी बाघराय, भलुहा, रतेवरा, साजी सहित कई गांव शामिल रहे। इस दौरान समाजसेवी संतरा देवी निषाद भारतीय किसान संघ के जिला उपाध्यक्ष शिवाकांत पांडेय उर्फ बाबा जी खजूरी, शुभम मिश्र, भारतीय किसान संघ काशी प्रांत की महिला प्रमुख उर्मिला सिंह, रीना देवी, प्रेम शंकर पटेल, धीरज सागर सहित कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। प्रत्येक गांवों में उत्साह के साथ लोगों ने भारत मां का पूजन अर्चन कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

यदुवंशी श्री कृष्ण एवं सूर्यवंशी श्री राम हमारे आदर्श हैं : रमाशंकर शुक्ल

सहसों। शौर्य दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय परिषद सदस्य रमाशंकर शुक्ल ने एक सहसों में एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि इतिहास गवाह है यदुवंशी जनार्दन श्री कृष्ण के सभी संस्कार जन्मस्थली मथुरा के कारागार में युक्ति से बाहर आना, उनके नामकरण संस्कार, उपनयन, विवाह संस्कार युक्त से ही संपन्न हुए। भाजपा की युक्ति से मथुरा की मुक्ति तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण ही कर देगे। समय आ गया है मथुरा और अयोध्या सनातन धर्मावलंबियों के संस्कृति की पहचान है अब इसे कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा ऋषि मुनियों का देश, हिंदू समाज के सनातन धर्मावलंबियों एवं संतों के आभूषण पर टिप्पणी करने वाले को समाज के लोग कभी क्षमा नही करेगे। यदुवंशी श्री कृष्ण और सूर्यवंशी श्रीराम हमारे आदर्श और इस धरा के संस्कृति के संवाहक हैं। हमारी पहचान हमारी संप्रभुता हमारा गौरव है। अखंड भारत की मुक्ति की ऐसी युक्ति में सन्निहित है। आने वाले दिनों में देश के गौरव को भाजपा मुक्ति दिलाएगी और हिंदू समाज एवं राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम करेगी। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष अनिल सरोज, महामंत्री पवन शुक्ला, बृजेश कुमार त्रिपाठी, मृगेंद्र सिंह, नरेंद्र कुशवाहा संजय सिंह, सत्यम त्रिपाठी, राजेश सरोज, वीरेंद्र शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

धान खरीद में गड़बड़ी करने वाले क्रय केंद्र प्रभारियों पर होगी एफआईआर : राजमणि कोल

अखंड भारत संदेश

लोगों को जानकारी देते भाजपा विधायक राजमणि कोल

रत्योरा। धान खरीद में गड़बड़ी करने वाले क्रय केंद्र प्रभारियों पर प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी। शासन की मंशा के अनुरूप सभी क्रय केंद्र प्रभारी किसानों के धान की खरीद करना सुनिश्चित करें। अन्यथा विभाग एवं शासन की ओर से विधिक कार्रवाई कराते हुए क्रय केंद्रों को निरस्त कराते हुए केंद्र प्रभारियों पर एफ आई आर दर्ज कराई जाएगी। यह बातें कोरांव के भाजपा विधायक राजमणि कोल ने क्षेत्र के परमसुख आदिवासी इंटर कॉलेज के प्रांगण में आयोजित धान क्रय हेतु लगाए गए केंद्र प्रभारियों की बैठक में उपस्थित केंद्र प्रभारियों को संबोधित करने के दौरान कही। विधायक ने कहा कि सरकार की मंशा है कि सभी किसानों की धान क्रय केंद्रों के माध्यम से क्रय कर ली जाए। बिचौलियों एवं दलालों पर सरकार पूरी तरह से सख्त है। कोई भी व्यक्ति अगर क्रय केंद्रों पर गलत कार्य करते पाया जाएगा तो उसके विरुद्ध कार्यवाही कराई जाएगी। विधायक ने बैठक में उपस्थित एएमओ प्रयागराज सुभाष यादव को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए पारदर्शी रूप से धान क्रय कराने की बात कही है। क्रय केंद्र प्रभारियों की बैठक में बड़ोखरा के रहने वाले भूपेश जायसवाल ने वित्तीय वर्ष 2020 - 21 में खरीदी गई धान का भुगतान न होने की शिकायत की। उन्होंने कहा कि परंपरा परपज एग्रो द्वारा खोले गए क्रय केंद्रों के माध्यम से लगभग 50 लाख रुपये से अधिक का घोटाला किया गया है। जिसका आज तक किसानों को भुगतान नहीं किया गया है।भूपेश ने आरोप लगाया कि इस

विधायक ने केंद्र प्रभारियों की बैठक में दिए दिशा निर्देश

समय परम्परा परपज एग्रो को नाम बदलकर दूसरे संस्था के नाम से कोरांव क्षेत्र में दो क्रय केन्द्र खुला है। शिकायत पर विधायक ने संबंधित विभागीय अधिकारियों से वार्ता कर शीघ्र भुगतान कराए जाने का आश्वासन दिया है। प्रभारियों की बैठक में साधन सहकारी समिति के सचिव लेडियारी, बड़ोखर, समेत प्राइवेट एजेंसियों के क्रय केंद्र प्रभारी मौजूद रहे। बैठक में नदारद रहे क्रय केंद्र प्रभारियों को भी विधायक ने आगाह किया है कि पारदर्शी रूप से धान खरीद करना सुनिश्चित करें। इस दौरान उपस्थित लोगों में प्रमुख रूप से भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह मुन्ना समेत कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

हनुमान जी सेवा धर्म के आचार्य हैं पं . निर्मल कुमार शुक्ल

पसना। हनुमान जी महाराज रामायण की प्राणवायु है रामायण के समस्त पात्रों पर आपका उपकार है आप संकट मोचन हैं। जब संसार के जीवों पर संकट आता है तो उसे श्री राम मिटाते हैं किन्तु जब राम पर ही संकट आ गया तब मात्र हनुमान जी ही एक ऐसे पात्र हैं जो उसे दूर करने में सक्षम हैं। सिद्ध हनुमान मंदिर पथरताल में आज राम कथा का शुभारंभ करते हुवे मानस महारथी पं निर्मल कुमार शुक्ल ने विशाल श्रोता समूह के समक्ष उक्त उद्गार व्यक्त किया।आपने कहा कि भगवान राम जब समस्त अयोध्या वासियों के साथ वैकुंठ जाने लगे तो हनुमान जी नहीं गये भगवान राम के बारे बार कहने पर भी जब आप वैकुंठ लोक जाने को तैयार नहीं हुए तब भगवान राम ने इसका कारण पूछा। नेत्रों में जल भर कर हनुमान जी बोले प्रभु यदि मैं वैकुंठ लोक गया तो वहां आप और आपके चरण तो मिल जाएंगे किंतु आपकी कथा नहीं मिल पाएगी इसलिए मैं धरती पर ही रह कर आपकी कथा श्रवण करूंगा। भगवान राम ने यह सुन कर प्रसन्नता पूर्वक वरदान दिया कि हनुमान जब तक धरती पर मेरी कथा गाई जाएगी तब तक तुम अजर अमर रह कर मेरी कथा श्रवण का आनंद लोगे। जहां कहीं भी राम कथा होती है हनुमान जी वहां पहुंच कर दोनों हांथ जोड़ कर राम कथा श्रवण करते हैं।आगे शुक्ल जी ने कहा कि सतयुग त्रेता द्वापर और कलियुग इन चारों युगों में हनुमान जी का प्रताप है यमराज भी आपसे डरते हैं भुत पिशाच डाकिनी शाकिनी वैताल महामारी सब हनुमान जी का स्मरण करते ही दूर भाग जाते हैं।कथा में बड़ी संख्या में श्रृद्धालु एकत्रित हो रहे हैं। आयोजन के व्यवस्थापक पं टी एन मिश्र ने समस्त क्षेत्र वासियों से हजारों की संख्या में उपस्थित होकर कथामृत पान करने का आग्रह किया है।आपने कहा सिद्ध हनुमान मंदिर में विराजमान हनुमान जी भक्तों की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं सभी भक्तों को अपने इष्ट परिवार सहित इस ज्ञान यज्ञ में भाग लेना चाहिए। यह कथा दि 9 दिसंबर तक रोज दोपहर 1 से 4 बजे तक चलेगी।दि 9 को मानस महारथी पं निर्मल कुमार जी शुक्ल को लापर रत्न से पुरस्कृत किया जाएगा।

ग्राम प्रधान संगठन कोरांव के कदम

ग्राम पंचायतों के प्रदत्त अधिकार हनन को लेकर शासन प्रशासन को दिये गये मांग पत्र पर बी डी ओ ने की लिखा पढ़ी

अखंड भारत संदेश

रामानुज यादव अध्यक्ष प्रधान संघ, शहजादे ग्राम प्रधान अल्हवा, मुकेश कुमार सिंह बी डी ओ, आलोक सिन्हा जिला पंचायत राज अधिकारी

कोरांव। अखिल भारतीय प्रधान संगठन विकासखंड कोरांव प्रयागराज द्वारा पंचायती राज में प्रदत्त ग्राम पंचायतों के अधिकार के हनन को लेकर प्रदेश के प्रमुख सचिव पंचायती राज विभाग लखनऊ एवं जिलाधिकारी प्रयागराज को 8 सूत्री मांग पत्र गत दिवस खंड विकास अधिकारी कोरांव मुकेश कुमार सिंह को सौंपा गया था। जिसे खंड विकास अधिकारी ने अपने आदेश कार्यालय पत्रांक 2876 दिनांकित 1 दिसंबर 2021 को जिलाधिकारी प्रयागराज एवं जिला पंचायत राज अधिकारी प्रयागराज मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज मुख्य राजस्व अधिकारी प्रयागराज जिला पूर्ति अधिकारी प्रयागराज उप जिलाधिकारी कोरांव प्रयागराज आदि को समुचित कार्यवाही के लिए मांग पत्र संलग्न कर अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रेषित किया है। बता दें कि पंचायती राज अधिनियम में ग्राम पंचायतों के अधिकार, कर्तव्य, कृत्य,प्रशासन की धारा 15 के तहत प्रदत्त अधिकारों का सदुपयोग न हो पाने से एवं राजस्व विभाग तहसील आपूर्ति विभाग और पुलिस विभाग द्वारा समुचित सहयोग न मिलने से उक्त ग्राम पंचायतों के अधिकार और कर्तव्य का क्रियान्वयन नहीं हो रहा जिस पर उंगली उठनी प्रारंभ हो गई है। ग्राम पंचायतों के प्रधानों अथवा भूमि प्रबंधक समिति के चेयरमैन लोगों का आरोप है कि ग्राम समाज की जमीनों के अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई किए जाने पर राजस्व विभाग एवं पुलिस विभाग द्वारा कोई यथोचित सहयोग नहीं मिलता जिससे ग्राम विकास में बाधाएं उत्पन्न हो रही है और राजस्व ग्राम समाज की अपूर्णनिय छती हो रही है,साथ ही कानून की अवहेलना हो रही है। इस संबंध में खंड विकास अधिकारी कोरांव मुकेश कुमार सिंह ने जिलाधिकारी प्रयागराज को पत्र भेज कर ग्राम प्रधानों के सहयोग की बात कही। इसी प्रकार जिला पंचायत राज अधिकारी प्रयागराज आलोक कुमार सिन्हा ने भी ग्राम पंचायतों के अधिकार और कर्तव्य में स्थानीय सक्षम तंत्रों द्वारा अपेक्षित सहयोग न मिलने उनके अधिकारों के हनन और शिकायत किए जाने पर आरोपी जन के साथ ग्राम प्रधान को भी उक्त कार्यवाही में पुलिस द्वारा अनावश्यक इनबॉल्व किया जाना निंदनीय बताया। उन्होंने कहा ग्राम पंचायतों के सहयोग हेतु समर्पित हूं। इसी प्रकार ग्राम प्रधान अल्हवा अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने कहा कि ग्राम पंचायतों को प्रदत्त अधिकारों का दोहन हनन शोषण कदापि बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन कोरांव रामानुज सिंह यादव ने कहा कि आठ सूत्रीय मांग पत्र का यदि अनुपालन नहीं किया जाता तो संगठन आंदोलन करेगा और मुख्य मंत्री या मुख्य सचिव यूपी लखनऊ से मिल कर शोषण करने वाले तहसील अधिकारियों,आपूर्ति और पुलिस विभाग की अनदेखी मनमानी को लेकर मिलेगा।

पलेवा करने को लेकर किसान परेशान

गेंहू की बुआई के समय नहर बंद

लालापुर। एक माह पूर्व से बंद कमला पंप कैनाल नहर के चलते किसानों की गेंहू की बुआई का कार्य बुरी तरह से बाधित हो रहा है ,जिससे किसानों के खेत पलेवा नहीं हो पा रहे हैं, और गेंहू की बुआई पिछड़ रही है। बताते चलें किगेंहू की बुआई का मुख्य समय 20 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक ही माना जाता है । लेकिन अकारण नहर को बंद कर दिया गया है जबकि लालापुर के पडुआ गांव के यमुना के किनारे कमला पंप कैनाल स्थापित है ।जिसे एक माह पूर्व से बंद कर दिया गया है । नहर में पानी ना छोड़े जाने से क्षेत्र के डेराबारी,नौढिया, लालापुर,गोइसरा,ओटघी,भटपुरा,अमिलिया,महेरा आदि दर्जनों गांव की हजारों एकड़ भूमि बिना पलेवा के सुखी पड़ी है।लालापुर के शिवेंद्र पाण्डेय रामजानकी जान कल्याण समिति के अध्यक्ष ने पोर्टल पर शिकायत भी किए दूसरी और भारतीय जान कल्याण परिषद के सचिन दीपक पाण्डेय ने भी पोर्टल के माध्यम से शिकायत की गई है।रामशंकर तिवारी,वीरेंद्र पांडेय डेराबारी के अमर सिंह,सोनवै के अभिषेक यादव आदि किसानों ने बताया कि कुछ गेंहू की फसल एक माह से ज्यादा की हो गई है, जिन्हें पानी की आवश्यकता है,इसी तरह काफी मात्रा में खेत बिना पलेवा के सूखे पड़े है जिनमे गेंहू की बुआई पिछड़ रही है।

खबर संक्षेप

बीएससी के छात्र ने की खुदकुशी, घर में मचा कोहराम

प्रयागराज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के बदरुद्दीनपुर गांव में बीएससी के एक छात्र ने घर के पास स्थित पेड़ में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बदरुद्दीनपुर गांव के लाल बहादुर पाल का 20 वर्षीय बेटा सौरभ जो कि बीएससी का छात्र था। मंगलवार को घर से कुछ दूर स्थित एक पेड़ में नायलॉन की रस्सी से फांसी लगा ली। उधर से गुजर रहे गांव के ही एक व्यक्ति की नजर फंदे पर लटके सौरभ पर पड़ी तो उसने शोर मचाया। रोते-बिलखते परिजन भी पहुंच गए और फंदे से उतारकर सौरभ को पास के एक अस्पताल ले गए। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सौरभ की मौत से घर में कोहराम मच गया। वह तीन बहनों में इकलौता भाई था। सौरभ की मां लखपत्ति देवी का रो-रो कर बुरा हाल है।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के चुनाव में राधाकांत अध्यक्ष व एसडी सिंह महासचिव बने

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन चुनाव के परिणाम आ गए हैं। अध्यक्ष पद पर राधाकांत ओझा निर्वाचित हुए हैं। चुनाव परिणाम के अनुसार महासचिव पद पर एसडी सिंह जादौन और वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर मनोज कुमार मिश्र निर्वाचित हुए हैं। चुनाव परिणाम आने के बाद विजयी हुए उम्मीदवारों ने एक-दूसरे को माला पहनाकर खुशियां मनाईं इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के चुनाव में तीनों महत्वपूर्ण पदों के नतीजे मंगलवार को घोषित कर दिए गए। अध्यक्ष पद पर वरिष्ठ अधिवक्ता राधाकांत ओझा ने दर्ज जीत दर्ज की। महासचिव पद पर एसडी सिंह जादौन को विजय मिली। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर मनोज कुमार मिश्र निर्वाचित हुए। 7549 अधिवक्ताओं ने बार एसोसिएशन चुनाव में मतदान किया था। राधाकांत ओझा और एसडी सिंह चार दिन तक चली मतगणना में शुरू से बढ़त बनाए रहे।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन का चुनाव जीतने के बाद विजयी मुद्रा में शुभचिंतकों के साथ

दो पदों के परिणाम सोमवार को घोषित हो चुके हैं

इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी के लिए सोमवार को दो पदों पर मतगणना पूरी होने के बाद परिणाम जारी कर दिए गए थे। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर संजय सिंह सोमवंशी 965 मत और लाइब्रेरी पद पर यादवेश यादव 1218 मत पाकर विजयी हुए हैं। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर विजयी प्रत्याशी संजय सिंह सोमवंशी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी सर्वेश कुमार दुबे को मात्र 66 मतों से हराया। इसी तरह संयुक्त सचिव लाइब्रेरी पद पर विजयी यादवेश यादव ने अजय सिंह को 279 मतों से शिकस्त दी। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर 30 मत और संयुक्त सचिव लाइब्रेरी पद पर 35 मत अवैध रहे।

अस्पताल में तोड़फोड़ करने वालों पर मुकदमा, नहीं हुई पहचान

प्रयागराज। धोबी घाट पेट्रोल पंप के सामने अमन अस्पताल में तोड़फोड़ और मारपीट करने वालों के खिलाफ सिविल लाइंस पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। सीसीटीवी फुटेज से उनकी पहचान की जा रही है लेकिन कोई सुराग नहीं लगा। पुलिस का कहना है कि राजापुर सिविल लाइंस समेत अन्य इलाकों में संपर्क किया जा रहा है। पुलिस को अब तक छानबीन से पता चला कि रविवार दोपहर में एक युवक को गंभीर हालत में लेकर कुछ लोग अमन अस्पताल पहुंचे थे। अस्पताल कर्मचारी ने गेट पर ही जांच की। गंभीर मरीज की पल्स न मिलने पर उसने भर्ती नहीं किया। अस्पताल की गाड़ी से ही किसी बड़े अस्पताल में भर्ती करने के लिए मरीज को रेफर कर दिया। परिवार सिविल लाइंस से मरीज को लेकर सरस्वती हार्ट केयर पहुंचा। लेकिन वहां पहुंचने से पहले ही मरीज की मौत हो चुकी थी। ऐसे में पुलिस को शक है कि मरीज की मौत से नाराज होकर अस्पताल में तोड़फोड़ की गई। अस्पताल में फायरिंग की बात भी आई थी लेकिन अस्पताल संचालक एमआई खान ने अस्पताल में घुसकर मारपीट, गाली-गलौच और धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया है।

न्यूज झरोखा

भाजपा प्रदेश संगठन द्वारा विधान सभा करछना में किया सामजिक सम्पर्क

करछना। विधान सभा करछना क्षेत्र में भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व में संगठन और पार्टी को मजबूत बनाने के लिए लोगों को संगठित तथा सरकार की योजनाओं की जानकारी देने आदि उपलब्धिया पहुचाने के लिए अभियान चला कर लोगों को जानकारी दी। भाजपा नेताओं नें मण्डल भीरपुर के ग्राम पिपरांव, अमिलो, डीहा, कबरा,रवनिका,में कोरांव के विधायक श्री राजमणि कोल जी द्वारा जन सम्पर्क करके सरकार की उपलब्धियों की जानकारी दिए। प्रधानमंत्री आवास योजना,उज्वला योजना,आयुष्मान कार्ड,किसान सम्मान निधि, मुफ्त राशन, आदि का लाभ मिल रहा है कि नहीं, सरकार की योजनाओं का लाभ आगे भी हर परिवार को मिले,इसके लिए योगी जी की सरकार लाना जरूरी है, ।आप सभी का सहयोग आवश्यक है।

भावी विधायक प्रत्याशी बारा वाचस्पति ने क्षेत्र मे भ्रमण कर किया जनसंपर्क

लालापुर। जनपद के बारा विधानसभा से भावी विधायक प्रत्याशी वाचस्पति ने सोमवार को विधानसभा क्षेत्र के कई गाँवो मे भ्रमण कर लोगों से डोर टू डोर मुलाकात कर उनकी समस्याओं को सुना व उनको जल्द ही निराकरण करने का आश्वासन दिया। बारा विधानसभा भाजपा के भावी प्रत्याशी वाचस्पति ने कहा कि मेरी विधानसभा ही मेरा परिवार है और अपने परिवार के लोगों की समस्याओं को हल करना मेरा पहला कर्तव्य है। जनसम्पर्क के दौरान लोगों ने वाचस्पति के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चलने की बात कही गई। जनसंपर्क के दौरान हम सभी ने यह ठाना है वाचस्पति को बारा विधायक बनाना है बारा विधानसभा की यही पुकार वाचस्पति अबकी बार आदि नारे लोगों ने लगाया और कहा कि अबकी बार वाचस्पति को ही बारा विधायक बनाना है। वाचस्पति ने बारा क्षेत्र के कंजासा नगरवार, महेरा, अमिलिया तरहार आदि गाँवो मे भ्रमण कर जनसंपर्क किया।

होमगार्ड को मारपीट कर रुपए छीनने वाले दो युवक व एक महिला को मेजा पुलिस ने पकड़ा

मेजा रोड। मेजा पुलिस ने सोमवार होमगार्ड के साथ मारपीट करने वाले दो युवक व एक महिला को आज पकड़कर जेल भेज दिया। बता दें कि सोमवार को मेजा थाने पर नियुक्त होमगार्ड शिव कुमार के साथ मांडा तिराहे पर कुछ लोगों ने मारपीट कर वर्दी फाड़ दिए और 15 सौ रुपए छीन लिए थे। वहीं मंगलवार को थाना प्रभारी मेजा पंकज कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व मे दरोगा जितेन्द्र कुमार राजपूत ने कांस्टेबल छविराम, अनुराग यादव व महिला कांस्टेबल प्रियंका यादव के साथ मांडा तिराहे से मारपीट के आरोपी अर्जुन आदिवासी पुत्र जंगी लाल, लालचंद आदिवासी पुत्र जंगी लाल व शिवानी देवी पत्नी अर्जुन निवासीगण मेजाखास को गिरफ्तार किया। थाना प्रभारी मेजा पंकज कुमार त्रिपाठी ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया।

नगर निगम के संविदा चालक की संदिग्ध दशा में मौत, हत्या की आशंका

प्रयागराज। नगर निगम में संविदाकर्मी चालक रवि कुमार की संदिग्ध दशा में मौत हो गई। उसका शव अल्लापुर पानी की टंकी के पास मिला। शरीर पर कई चगह चोट के निशान हैं। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा।रवि नगर निगम में संविदा चालक था। वह अल्लापुर हैजा अस्पताल के पास कच्चे मकान में रहता था। परिवार में उसकी पत्नी और दो बेटे और एक बेटा है। परिजनों ने उसकी हत्या की आशंका जाहिर की है। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

किसी बड़ी वारदात के इंतजार में पुलिस, जली हुई कार को नहीं लिया कब्जे में...

अखंड भारत संदेश

नैनी। क्या नैनी कोतवाली पुलिस किसी बड़ी वारदात के इंतजार में बैठी हुई है। नैनी कोतवाली क्षेत्र स्थित देवरख घाट पर अराजक तत्वों के द्वारा खराब खड़ी कार को आग के हवाले कर दिया गया था। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल करते हुए बैरंग वापस लौट आई थी, भुक्तभोगी ने तहरीर भी दी, लेकिन रिपोर्ट दर्ज करना तो दूर की बात है। जली हुई कार को कब्जे में लेने की जहमत तक नहीं उठाया। ऐसे पुलिस की ही मंशा पर कई सवाल उठते हैं कि आखिरकार पुलिस संदिग्ध पॉइंट एरिया जिसे कछार कहा जाता है। जिस स्थान पर कार को आग के हवाले किया गया है। बीते कई वर्षों पूर्व उस इलाके में कई बड़ी वारदात को भी अंजाम दिया जा चुका है। क्या पुलिस किसी बड़ी वारदात के इंतजार में है और तब कहीं जाकर ताबड़तोड़ कार्रवाई करेगी। हालांकि यह तो पुलिस का विषय है कि कब वह कार्रवाई करेगी। बता दें कि नैनी कोतवाली क्षेत्र के देवरख घाट के समीप खराब खड़ी कार को अराजक तत्वों ने दो दिन पूर्व रात्रि प्रहर के बाद भोर लगभग 4:00 बजे आग के हवाले कर दिया था। कार धूं-धूं करके जलकर राख हो गई थी। वहीं प्रयागराज पुलिस क्राइम ग्राफ को कम करने के लिए आए दिन बैठकों का दौर जारी रखे हुए हैं। फिर भी इस प्रकार की घटना घटित हो रही है। सवाल उठता है कि क्या पुलिस किसी बड़ी वारदात के इंतजार में बैठी हुई है। जबकि मामले की जानकारी स्थानीय अधिकारियों से लेकर प्रयागराज के आला अफसरों तक को है। फिर भी जली हुई कार को मौके वारदात से पुलिस ने कब्जे में नहीं लिया। इतना ही नहीं समाचार लिखे जाने तक भुक्तभोगी की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज भी नहीं किया जा सका था। बता दें कि जिस स्थान पर अराजक तत्वों के द्वारा कार को आग के हवाले किया गया है। उसी के आसपास दिन के उजाले में बालू की निकासी का कार्य बड़े पैमाने पर जारी है। इस संबंध में स्थानीय पुलिस कुछ भी बोलने से बच रही है।

दो दिन पूर्व खराब खड़ी कार को अराजक तत्वों ने कर दिया था आग के हवाले

श्रीराम प्रजापति को बनाया गया समाजवादी बाबा साहब वाहिनी का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। यमुनापार, कोरांव तहसील के अंतर्गत लेडियारी बाजार के निवासी श्रीराम प्रजापति को सोमवार को माननीय अखिलेश यादव जी (पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी पार्टी) द्वारा समाजवादी बाबा साहब वाहिनी का *राष्ट्रीय उपाध्यक्ष* बनाया गया जिससे सपा समर्थकों में भारी उत्साह देखने को मिला।श्रीराम प्रजापति ने बतलाया की

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा मुझ पर जताए गए इस विश्वास पर मैं पूरी निष्ठा, लगन और ईमानदारी के साथ खरा उतरने की कोशिश करूंगा और अपने दबे-कुचले समाज को बदलाव की इस मुहिम का हिस्सा बनाने का पुरजोर प्रयत्न करूंगा,साथ ही साथ बताया कि आज समूचे उत्तर प्रदेश की जनता अपने को ठगा सा महसूस कर रही है ' बीते वर्षों में भाजपा सरकार द्वारा कोई भी कार्य युवाओं के विकास हेतु नहीं किया गया जिसके कारण प्रदेशभर में तेजी से बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है' आपको बता दें कि कल दिन बुधवार को प्रजापति के प्रथम गृह जनपद आगमन की खबर सुनते ही सपा समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी है,कई स्थानों पर उनके स्वागत के लिए लोगों ने तैयारियां की है। इन सबके साथ साथ ये अपने सामाजिक कार्यों से लोगों के दिलों में एक अलग ही स्थान बनाए है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट से छात्रा ने मांगी सुरक्षा, पिता व भाई से जान का खतरा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट से अपने ही पिता और भाइयों से जीवन? को खतरा बताते हुए एक छात्रा ने सुरक्षा मांगी थी। यह छात्रा उमा भारती कर्नलगंज में रहकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही है। कोर्ट ने उसकी अर्जी एसएसपी प्रयागराज को निर्णय लेने का निर्देश दिया है। कहा है एसएसपी देखें कि संरक्षण दिया जा सकता है या नहीं। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति विक्रम डी चौहान की खंडपीठ ने मंगलवार को दिया।

याची का कहना था कि वर्ष 2016 मे उसकी मर्जी के खिलाफ परिवार ने शादी कर दी। पति शराब पीकर मारता-पीटता था और गाली-गलौज करता था। 2017 में पति ने दूसरी शादी भी कर ली। इस पर याची कर्नलगंज में रह कर कंप्टीशन की तैयारी कर रही है। पिता और भाई उसे मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर रहे हैं। वे धमका रहे हैं और जबरन दूसरी शादी कराना चाहते हैं। वह बालिग है। स्वतंत्र रहने का उसे अधिकार है। पिता और भाइयों से उसे संरक्षण दिलाया जाए।

पंचायत सहयकों को दिया गया अभिमुखीकरण प्रशिक्षण

पंचायत सहायकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी

अखंडभारतसंदेश

करछना। विकास खंड करछना के समस्त ग्राम पंचायतों में नियुक्त पंचायत सहायको का अभिमुखीकरण कार्यक्रम प्रस्तावित था , जिसमे उनके कार्य दायित्वों पर विस्तृत जानकारी दी गई , बैठक की अध्यक्षता एडीओ पंचायत विवेक मिश्रा द्वारा की गई जिसमें उन्होंने पंचायत भवन में नियमित उपस्थिति तथा ग्राम पंचायत के कार्यों का निर्वहन करने पर विशेष जोर दिया। सहायक विकास अधिकारी रामेश्वर सिंह द्वारा विभिन्न परियोजनाओं पर पंचायत सहायकों को जानकारी दी गई जिससे कि उनके द्वारा ग्राम पंचायत में चल रहे प्रत्येक परियोजना के प्रति जागरूकता बनी रहे, वही ब्लॉक मिशन प्रबंधक आदित्य तिवारी द्वारा पंचायत सहायकों को ग्राम पंचायत मैं चल रहे मनरेगा तथा एन आर एल एम जैसी विशिष्ट परियोजनाओं पर विस्तृत जानकारी दी तथा ऑनलाइन फीडिंग के प्रति शासन के निदेशों का पालन करने के निर्देष दिए एवम् ग्राम पंचायत के सामुदायिक शौचालय पर तैनात केयरटेकर तथा बीसी सखी के साथ समन्वय बनाते हुए प्रतिदिन की मॉनिटरिंग करने की सलाह दी, इसी क्रम में संजय चौधरी द्वारा एमआईएस के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी गई तथा मौके पर उपस्थित अन्य ब्लॉक कर्मी धर्मेंद्र यादव अतुल मिश्रा ,दुष्यन्त प्रताप सिंह, रवि कुमार, समर बहादुर आदि उपस्थित रहे।

दवा लेने जा रही महिला की सड़क हादसे में हुई मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दवा लेने जा रही एक वृद्ध महिला को पिकअप चालक ने रौंद दिया है जिससे वृद्ध महिला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई लेकिन तसल्ली की खातिर परिजनों ने घटनास्थल पर पहुंचकर दुर्घटनाग्रस्त वृद्ध महिला को इलाज के लिए नजदीकी हॉस्पिटल ले गए गए जहां पर डाक्टरों ने वृद्ध महिला को मृत घोषित कर दिया। वृद्ध महिला की मौत के बाद पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर लिखा पढ़ी कर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया घटना के बाद से परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। गौरतलब है कि पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के पूरामुफ्ती स्थित पुरानी बाजार की रहने वाली नजमा बेगम उम्र लगभग पच्चास वर्ष पत्नी मुस्ताक अहमद पदयात्रा करते हुए दवा लेने जा रही थी लेकिन अनियंत्रित लापरवाह पिकअप चालक ने वृद्ध महिला को रौंद दिया जिससे मौके पर ही वृद्ध महिला की मौत हो गई। वृद्ध महिला को रौंदने के बाद पिकअप चालक पिकअप लेकर भाग रहा था लेकिन आसपास मौजूद लोगों ने दौड़ाकर पिकअप चालक और पिकअप को पकड़कर पुलिस के हाथों सौप दिया। पूरामुफ्ती पुलिस चालक और पिकअप को अपने कब्जे में लेकर अग्रिम कार्यवाही में जुटी है।

अस्पताल में तोड़फोड़ करने वालों पर मुकदमा, नहीं हुई पहचान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। धोबी घाट पेट्रोल पंप के सामने अमन अस्पताल में तोड़फोड़ और मारपीट करने वालों के खिलाफ सिविल लाइंस पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। सीसीटीवी फुटेज से उनकी पहचान की जा रही है लेकिन कोई सुराग नहीं लगा। पुलिस का कहना है कि राजापुर सिविल लाइंस समेत अन्य इलाकों में संपर्क किया जा रहा है।पुलिस को अब तक छानबीन से पता चला कि रविवार दोपहर में एक युवक को गंभीर हालत में लेकर कुछ लोग अमन अस्पताल पहुंचे थे। अस्पताल कर्मचारी ने गेट पर ही जांच की। गंभीर मरीज की पल्स न मिलने पर उसने भर्ती नहीं किया। अस्पताल की गाड़ी से ही किसी बड़े अस्पताल में भर्ती करने के लिए मरीज को रेफर कर दिया। परिवार सिविल लाइंस से मरीज को लेकर सरस्वती हार्ट केयर पहुंचा। लेकिन वहां पहुंचने से पहले ही मरीज की मौत हो चुकी थी। ऐसे में पुलिस को शक है कि मरीज की मौत से नाराज होकर अस्पताल में तोड़फोड़ की गई। अस्पताल में फायरिंग की बात भी आई थी लेकिन अस्पताल संचालक एमआई खान ने अस्पताल में घुसकर मारपीट, गाली-गलौच और धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया है।

दलित परिवार के चार लोगों की हत्या के मामले में और दो लोग गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। फाफामऊ थाना क्षेत्र के गोहरी गांव में दलित वर्ग के एक परिवार के चार लोगों की हत्या के मामले में पुलिस ने सोमवार को और दो लोगों को गिरफ्तार किया।

पुलिस अधीक्षक (गंगापार) अभिषेक कुमार अग्रवाल ने बताया कि पुलिस को कुछ महत्वपूर्ण साक्ष्य मिले थे जिसमें मोबाइल की रिकॉर्डिंग और चैट शामिल है। इस संबंध में परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मद्देनजर शशि पटेल और रजनीश पटेल को गिरफ्तार किया गया। अग्रवाल ने बताया कि फॉरेंसिक जांच में कुछ रिपोर्ट लंबित है। मामले की जांच में सहयोग नहीं करने के लिए इन दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। मृतक परिवार ने जिन 11 लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई थी, उनके नमूने भी डीएनए जांच के लिए भेजे गए हैं। एसपी ने बताया कि सोमवार को जिन दो लोगों को गिरफ्तार किया गया उनके मोबाइल में रिकॉर्डिंग, चैट और आपत्तिजनक फोटो मिले हैं। घटना से पहले के चैट भी इनके मोबाइल में मिले हैं। पुलिस विस्तृत जांच कर रही है और समुचित धाराओं में इनके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया जाएगा।इससे पहले पुलिस ने मामले में पवन सरोज नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार किया था। पुलिस के मुताबिक, पवन सरोज लगातार पीड़ित परिवार की एक लड़की को परेशान करता था और उसके मोबाइल पर मैसेज भेजता था। अंतिम मैसेज और परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर पवन सरोज को गिरफ्तार किया गया। वहीं, गोहरी हत्याकांड मामले में आरोपी 11 लोगों में से चार लोगों को एक पुराने मामले में गिरफ्तार कर पहले ही जेल भेजा जा चुका है।उल्लेखनीय है कि फाफामऊ के गोहरी गांव में 24 नवंबर की रात दलित परिवार के चार लोगों की धारदार हथियार से हत्या कर दी गई थी। इस घटना के बाद 26 नवंबर को कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने पीड़ित परिवार की महिलाओं का दुख साझा किया और इस घटना को लेकर सरकार पर निशाना साधा था। वहीं, बहुजन समाजवादी पार्टी (बसपा) की प्रमुख मायावती ने भी इस घटना को लेकर योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार की आलोचना की थी।

सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित नियमों का नागरिक करें पालन : सदर विधायक

अखंड भारत संदेश

तृतीय सड़क सुरक्षा सप्ताह का सदर विधायक ने किया उद्घाटन

सड़क सुरक्षा सप्ताह का प्रमाण पत्र देते सदर विधायक राजकुमार पाल

प्रतापगढ़। तृतीय सड़क सुरक्षा सप्ताह का उद्घाटन विधायक सदर राजकुमार पाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विधायक सदर द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यक्रम में साकेत गर्ल्स महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

विधायक सदर द्वारा सड़क सुरक्षा सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित निबन्ध, कविता लेखन, क्विज आदि प्रतियोगिताओं में चयनित उच्च प्राथमिक विद्यालयों/माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों के प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिताओं के आयोजन/संयोजन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले प्रधानाचार्यों, निर्णायक मण्डल के सदस्यों, गाइड शिक्षकों को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विधायक सदर ने सभी को सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित नियमों का पालन करते हुये वाहन चलाने हेतु आवाह्न किया। कार्यक्रम का आयोजन सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सुशील कुमार मिश्रा द्वारा किया गया। इस अवसर पर जन सामान्य को सड़क सुरक्षा के नियमों और वाहन चलाते समय बरती जाने वाली सावधानियों के प्रति जागरूक करने के लिये एक मोबाइल एलईडी वाहन को विधायक सदर ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह एलईडी वैन गांव-गांव घूमकर लोगों को जागरूक करेगें। इस मोबाइल वाहन के साथ लगाये गये अधिकारी/कर्मचारी जन सामान्य को सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित नियमों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सहायता करेगें। इस दौरान विजय सिंह, राघवेन्द्र शुक्ला, बीएल सरोज, डा0 विन्ध्याचल सिंह, मो0 उमर जमील सहित अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा0 मो0 अनीस द्वारा किया गया।

मार्ग दुर्घटना में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से जख्मी

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी-रानीगंज मार्ग पर उड़ैयाडीह बाजार के समीप जलालपुर मोड़ पर बाइक सवार युवक एक छात्रा को बचाने के चक्कर में सड़क पर गिर गया जिससे उसके सिर और पैर में काफी चोटें आई। मौजूद लोगों ने एंबुलेंस को फोन करके उसके परिजनों को सूचना दिया। मौके पर पहुंचे परिजन युवक को अस्पताल में भर्ती कराया। पट्टी क्षेत्र के लौवार गांव का रहने वाला मुन्ना अपनी बहन कंचन को उसकी ससुराल पहुंचाने के लिए रानीगंज की तरफ मंगलवार की दोपहर पट्टी रानीगंज मार्ग से होकर जा रहा था। जैसे ही वह जलालपुर मोड़ के समीप ईट भट्ठा के पास पहुंचा, एक छात्रा को बचाने के चक्कर में उसकी बाइक असंतुलित होकर सड़क पर गिर गई जिससे उसे काफी चोटें आई। जबकि उसकी बहन कंचन बाल-बाल बच गई। मौजूद लोगों ने उसके परिजनों को फोन करके मामले की जानकारी दी और एंबुलेंस बुलाया। मौके पर पहुंचे परिजनों ने जख्मी युवक को अस्पताल पहुंचाया

जिला चिकित्सलाय में चिकित्सक से पूछताछ करती पुलिस

जिला अस्पताल के डाक्टर के सांसद समर्थकों ने की गाली-गलौज, अफरा-तफरी

अखंड भारत संदेश

पुलिस ने चिकित्सक का लिया बयान

प्रतापगढ़। मेडिकल कालेज के पुरुष अस्पताल में मंगलवार को अपरान्ह उस समय अफरा-तफरी मच गई जब सांसद संगम लाल गुप्ता के भाई के साथ आए कुछ लोगों ने एक बालिका का बेहतर इलाज को लेकर ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक से उलझ गये। बाद में वाद-विवाद के बाद चिकित्सक से बदसलूकी व गाली-गलौज की गई। घटना की सूचना मिलते ही अस्पताल कर्मी एकत्र हो गये और पुलिस भी पहुंची तो किसी तरह भीड़ को हटाया गया।

यह घटना मंगलवार को अपरान्ह लगभग साढे.चार बजे की बताई जाती है। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डा0 रमेश वर्मा से पुलिस ने उनका बयान लिया है। उधर चिकित्सक ने आपबीती बताते हुए कहा कि सांसद के भाई दिनेश गुप्ता के साथ कुछ लोगों ने उनके साथ गाली-गलौज व बदसलूकी है। पुलिस ने उन्हें किसी तरह बाहर किया। इस घटना से चिकित्सकों में भारी रोष है। देखना है कि ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक पर हमला करने वाले सत्तादल समर्थकों पर पुलिस क्या कार्यवाही करती है।

साथी पर जानलेवा हमले को लेकर वकील आक्रोशित, एसडीएम को ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ के पूर्व अध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्र पर हत्या के प्रयास में घटना के तीसरे दिन भी आरोपी की गिरफ्तारी न होने पर मंगलवार को भी यहां अधिवक्ता आक्रोशित दिखे। अधिवक्ताओं ने प्रशासन के खिलाफ तहसील परिसर में नारेबाजी की। इसके बाद वकील संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष राममोहन सिंह की अगुवाई में एसडीएम कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गए। जानकारी होने पर एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह वकीलों के बीच पहुंचे। तब वकीलों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर अधिवक्ता पर जानलेवा फायरिंग करने वाले आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर अपनी मांग रखी। एसडीएम ने वकीलों को जल्द कार्यवाही का भरोसा दिलाया। अधिवक्ताओं ने मंगलवार को भी न्यायिक कामकाज का बहिष्कार किया। धरना का संयोजन उपाध्यक्ष संतोष पाण्डेय व संचालन महामंत्री प्रवीण यादव ने किया। इस मौके पर उपाध्यक्ष उमेश तिवारी, देवी प्रसाद मिश्र, अजय शुक्ल गुड्डू, ज्ञानप्रकाश शुक्ला, केपी पाण्डेय, विकास मिश्र, अनिल महेश, हरिशंकर द्विवेदी, सुमित त्रिपाठी, विपिन शुक्ल, शेष त्रिपाठी, रामकुमार पाण्डेय, रामअभिलाख यादव, घनश्याम मिश्र, दिनेश मिश्र, प्रदीप सिंह, मो0 अस्लम, अभिषेक शुक्ल, प्रमोद सिंह, गयाप्रसाद मिश्र, शैलेन्द्र सिंह, धीरेन्द्र शुक्ल, विनोद मिश्र, जयकरन सिंह, राजेश्वर यादव, हरिश्चन्द्र पाण्डेय आदि अधिवक्ता रहे।

बीस लीटर अवैध शराब बरामद, आरोपी धराया

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने एक आरोपी को दो प्लास्टिक जरीकेन में भरी अवैध शराब के साथ धर दबोचा। एसआई राजेन्द्र कुमार ने बीती छह दिसम्बर को गश्त पर थे। इस बीच मिटना का पुरवा अगई के प्राथमिक विद्यालय के मोड़ पर अर्जुनपुर का रोंघई सरोज पुत्र रामेश्वर प्लास्टिक की जरीकेन के साथ संदिग्ध अवस्था में मिल गया। आरोपी के पास से बीस लीटर अवैध शराब बरामद हुई।

आरोपियों ने महिला का जबरन तोड़ा मकान

पट्टी, प्रतापगढ़। आरोपियों ने एक विधवा महिला की घर को जबरन दबंगई दिखाते हुए तोड़ दिया। पीड़ित महिला ने मामले में पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। कंधई थाना क्षेत्र के शेखनपुर गांव की रहने वाली आशा देवी ने बताया कि उसके पति राम शिरोमणि की मौत हो चुकी है। वह बुजुर्ग महिला घर में अकेले टीन सेड बनाकर दस वर्ष से रहती है। सोमवार को उसके पड़ोसी अपने आधा दर्जन लोगों के साथ पहुंचा और टीनशेड तोड़कर घर में रखा सामान उठा ले गये। पुलिस को सूचना देने पर पुलिस ने घरेलू सामान महिला से दिलवाया। वही महिला का आरोप है कि आरोपियों ने उसकी दीवाल की ईट उखाड़ ले गए।

व्यापार मण्डल अध्यक्ष के घर पहुंचकर सीडब्लूसी मेंम्बर ने जताई संवेदना

अखंड भारत संदेश

क्षेत्र में भ्रमण कर प्रमोद तिवारी ने सुनी समस्याएं

व्यापार मण्डल के अध्यक्ष की पत्नी के निधन पर संवेदना जताते प्रमोद तिवारी

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने मंगलवार को रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र में दौरा कर लोगों की समस्याओं से रूबरू हुए। प्रमोद तिवारी ने दौरे के तहत पार्टी कार्यकताओं से भी मुलाकात कर क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा क्षेत्र में कराए जा रहे विकास कार्यों को जनता तक पहुंचाए जाने की भी बात कही।

श्री तिवारी ने अठेहा के उचवा में विधायक मोना द्वारा स्वीकृत करायी गयी चौदह लाख की लागत से नवनिर्मित पिचरोड भी ग्रामीणों को विधायक की ओर से सौगात के रूप में सौंपी। घुइसरनाथ व्यापार मंडल के अध्यक्ष एवं अधिवक्ता अखिलेश मिश्र के आवास पर पहुंचकर उनकी पत्नी के निधन पर परिजनों को ढाढस बंधाया। बाबा घुइसरनाथ धाम में दर्शन पूजन कर यहां भी प्रमोद तिवारी लोगों की समस्याओं की सुनवाई करते हुए समाधान का भरोसा दिलाया। देवरी गांव में पूर्व बीडीसी रमाशंकर के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। वहीं राहाटीकर में हाल ही में शेर बहादुर सिंह के घर पहुंचकर उनके भाई अजय सिंह की हत्या पर परिजनों से मिलकर संवेदना प्रकट की। इस मौके पर सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बबलू, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल, आशीष उपाध्याय, मुन्ना सिंह परिहार, अशोकधर द्विवेदी, रामबोध शुक्ल, सुधाकर पाण्डेय, इगपाल यादव आदि लोग मौजूद रहे।

ओमिक्रान की दस्तक पर नगर पालिका हुई सतर्क

अखंड भारत संदेश

सभी 25 वार्डों व विस्तारित क्षेत्रों में रोज होगी सफाई

एंटी लार्वा का छिड़काव करते सफाई कर्मी

प्रतापगढ़। कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रान की दस्तक पर एवं शासन के आए निर्देश तथा जिलाधिकारी के आदेश को लेकर नगर पालिका ने नगर के सभी वार्डों व विस्तारित क्षेत्रों में साफ-सफाई का विशेष अभियान चलाया है तथा एंटी लार्वा का छिड़काव व सेनेटाइजेशन का कार्य भी किया जाएगा।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर क्षेत्र में सुबह से लेकर ग्यारह बजे तक पूरे नगर में झाड़ू से सफाई की जाएगी तथा 11 बजे से पूर्वान्ह दो बजे तक नाले-नालियों की सफाई प्रतिदिन की जाएगी। इसकी कार्ययोजना नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह द्वारा बनाई गई है। इसके अलावा प्रतिदिन पांच वार्डों में एंटी लार्वा का छिड़काव तथा सेनेटाइजेशन किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि नगर पालिका के सफाई कर्मचारी अध्यक्ष और ईओ के निर्देश पर शहर को साफ-सुथरा रखते हुए संक्रमण से बचाने का भरसक प्रयास करने में जी-जान से जुट गये हैं। मंगलवार को जेसीबी, नाला क्लीनिंग मशीन लगाकर साफ-सफाई की गई। कई वार्डों में एंटी लार्वा का छिड़काव किया गया।

अफीम कोठी में प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को दी गई जानकारी

प्रतापगढ़। क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी के सभागार में सैम/मैम/स्टटिंग/वेस्टिंग बच्चों/गम्भीर अल्प वजन बच्चों के चिन्हांकन, सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर उनका चिकित्कीय उपचार, एन0आर0सी0 में बच्चों के भर्ती कराये जाने, एन0आर0सी0 में सुविधाओं एवं उपचार, पोषण टेज्कर पर फीडिंग/अपलोडिंग, पोषण वाटिका आदि महत्वपूर्ण सामयिक विषयों प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने निर्देशित किया कि आंगनबाड़ी कार्यकत्री ग्राम पंचायतों में घर-घर सर्वे करके अतिकुपोषित बच्चों एवं गम्भीर अल्प वजन के बच्चों का चिन्हांकन कर सूची बना लें। ऐसे बच्चों को पहले सम्बन्धित सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर उनका इलाज करायें यदि गम्भीर बीमारी से ग्रस्त है तो उनको जिला चिकित्सालय में स्थित एन0आर0सी0 प्रभारी से सम्पर्क कर उन्हें भर्ती कराया जायें ताकि उनका बेहतर इलाज सम्पन्न हो सके। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया ने भी बाल विकास परियोजना अधिकारियों एवं मुख्य सेविकाओं को महत्वपूर्ण जानकारी दी एवं कहा कि सभी अपने-अपने कार्यों एवं दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करें। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, जिला कार्यक्रम अधिकारी पवन कुमार, प्राचार्य अफीम कोठी शिव प्रकाश सहित सम्बन्धित अधिकारी व बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं मुख्य सेविका उपस्थित रही।

श्रीराम के नाम का सुमिरन ही आलौकिक सुख-प्रकाशचन्द्र महाराज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के रामअंजोर मिश्र इण्टर कालेज के मैदान पर श्रीरामकथा ज्ञानयज्ञ महोत्सव में मंगलवार को श्रद्धालुओं का उत्साहजनक समागम दिखा। अयोध्याधाम से पधारे कथाव्यास प्रकाशचन्द्र जी महाराज ने कहा कि श्रीराम के नाम का सुमिरन ही आलौकिक सुख है। उन्होंने कहा कि श्रीराम का स्मरण करने वाला कभी भी दुःख की अनुभूति नहीं किया करता। उन्होंने कहा कि सुख और दुःख दोनों महसूस करने पर मनुष्य को बोध कराया करता है। प्रकाशचन्द्र जी ने कहा कि श्रीराम की मयार्दा सदैव मानव तन व मन को प्रभु की कृपा का फल देकर संसार के भव सागर से मोह और माया से भी बचाया करती है। उन्होंने कहा कि श्रीराम का जीवन दर्शन परिवार अथवा राज्य दोनों के संचालन में आदर्श व्यवस्था के पथ प्रदर्शन का दिव्य स्वरूप है। संचालन शक्तिनारायण जी व संयोजन संकल्पदास जी महाराज ने किया। इस मौके पर चेयर पर्सन संतोष द्विवेदी, पंडित वज्रघोष ओझा, राजेश सिंह, अनिल महेश, भानू प्रताप सिंह, शिवकृपाल शुक्ला, बृजेश द्विवेदी, डॉ0 फणीन्द्र नारायण मिश्र, डॉ0 सविता उपाध्याय, डॉ. हरिमोहन जायसवाल आदि ने कथा व्यास का श्रीअभिषेक किया।

आज आएंगी राज्य महिला आयोग की सदस्या

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्या सुमन सिंह आठ दिसम्बर को जनपद प्रतापगढ़ के लोक निर्माण विभाग के गेस्ट हाउस में आयेंगी जहां पर वह मिशन शक्ति फेज-3 के अन्तर्गत महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न कल्याणकारी योजनायें विषयक जागरूकता शिविर एवं महिला जनसुनवाई करेंगी। जनपद की पीड़ित महिलाएं आठ दिसम्बर को लोक निर्माण विभाग के गेस्ट हाउस में उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का निराकरण करायें।

दलित महिला से दुष्कर्म व मारपीट को लेकर रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने आधा दर्जन आरोपियों के खिलाफ दलित महिला के साथ दुष्कर्म तथा मारपीट व जानलेवा धमकी को लेकर सोमवार की रात केस दर्ज किया है। कोतवाली के महेशपुर निवासी मिठाई लाल की पत्नी भीमारानी ने दी गई तहरीर में कहा है कि गांव के रियाज अहमद ने उसे शादी का झांसा देकर कई बार जबरिया दुष्कर्म किया। हाल ही में पीड़िता ने आरोपी की हरकतों का विरोध किया तो उसे आरोपी ने जातिसूचक शब्दों से गाली देते हुए मारापीटा। आरोपी की जब पीड़िता ने उसके परिवार से शिकायत की तो आरोपी रियाज अहमद पुत्र शौकतअली, शौकतअली पुत्र अज्ञात, रियाज की मां, मो. शकील पुत्र शौकत अली, फारूक के पुत्र शहरूख व मुख्तार के पुत्र इजहार ने भी पीड़िता को मारापीटा। पीड़िता ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस जांच के नाम पर केस दर्ज नहीं कर रही थी। इस पर पीड़िता ने सोमवार को सीओ से आपबीती सुनाई।

लूट की घटना करने वाले दो अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

पांच हजार रुपये व चार देसी बम बरामद

प्रतापगढ़। थाना क्षेत्र कंधई के मन्दाह गेट के पास मोटर साइकिल सवार तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा युवक से 15 हजार रुपए नकद व उनका मोबाइल फोन लूट लिया गया था। इस संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 381/2021 धारा 392 भादंवि का अभियोग अज्ञात के विरूद्ध पंजीकृत किया गया।

इसी क्रम में थाना कंधई पुलिस द्वारा उक्त घटना का सफल अनावरण करते हुए मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र कंधई के ओझला स्कूल के पास से दो व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से उक्त अभियोग से संबंधित लूट के पांच हजार रुपए व 04 अदद देसी बम बरामद किये गये। गिरफ्तार अभियुक्तों ने पूछताछ में बरामद देसी बम के संबंध में बताया कि हमारी एक युवक से आपसी रंजिश है जिसे क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से हम लोगों ने ये बम अपने पास रखे हुए हैं। कड़ाई से पूछताछ में अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि 29 अक्टूबर को मन्दाहा गेट के पास से हम दोनों व हमारे एक अन्य साथी द्वारा एक युवक से पैसे व उसका मोबाइल फोन लूट लिया गया था, जिससे हम तीनों को हिस्से में 05-05 हजार रुपए मिले थे। हमारे पास जो रुपए बरामद हुए वो उसी लूट से संबंधित बचे हुए रुपए हैं तथा अपने हिस्से के रुपए व लूट का मोबाइल फोन हमारे तीसरे साथी के पास हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों में इरसाद अहमद पुत्र निसार अहमद निवासी रामपुर कुर्मियान थाना कंधई व विजय प्रताप सिंह उर्फ भोले सिंह पुत्र देवब्रत सिंह निवासी सराय भीमसेन थाना कंधई शामिल रहे।

होमगार्ड पर जमीन पर कब्जा करने का आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। एक व्यक्ति ने आसपुर देवसरा थाने में तैनात एक होमगार्ड पर जबरन जमीन पर कब्जा करने का आरोप लगाया है। क्षेत्र के कोटिया रामगढा गांव के रहने वाले मनोज कुमार पाठक ने क्षेत्राधिकारी पट्टी को दिए गए शिकायती पत्र में आरोप लगाया है कि उसके बैनामे की जमीन पर आसपुर देवसरा थाने में तैनात होमगार्ड जबरन कब्जा कर रहा है। उसने बताया कि उक्त जमीन पर वह 25 वर्षों से काबिज है। इसके बावजूद भी होमगार्ड उसकी जमीन को जोतने नहीं दे रहा है। आसपुर देवसरा पुलिस होमगार्ड की मदद भी करते हैं। पीड़ित की सुनवाई नहीं होने पर उसने शिकायती पत्र देकर क्षेत्राधिकारी से इंसाफ की गुहार लगाई है।

परीक्षा केन्द्र से दर्जन भर मोबाइल चोरी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कटरा रोड स्थित एक सीबीएसई परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा देने आए परीक्षार्थियों की बाहर रखे वाहन में मोबाइल खो जाने की खबर है। इस मामले में बताया जाता है कि दर्जन भर मोबाइल चोरी हो गये हैं। इससे परीक्षार्थियों में रोष दिखा। बताया जाता है कि परीक्षार्थियों ने गेट के बाहर अपनी मोटरसाइकिल की डिग्गी में मोबाइल व पर्स रखे थे।

परिषदीय विद्यालयों की बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता का विधायक ने किया शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

सुजानगंज और रेडीगारापुर की टीम हुई विजेता

दीप प्रज्जवलित करते रानीगंज विधायक धीरज ओझा

प्रतापगढ़। जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में मंगलवार को परिषदीय विद्यालयों की बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता का शुभारंभ रानीगंज विधायक धीरज ओझा ने दीप जलाकर तथा सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर प्रारंभ किया।

इस अवसर पर विधायक श्री ओझा ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिता में बच्चों की प्रतिभा का विकास होता है। प्रारंभ में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने मुख्य अतिथि श्री ओझा का स्वागत किया और कार्यक्रम की रुपरेखा बताया। कार्यक्रम में बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। पट्टी प्रतिनिधि के अनुसार क्षेत्र के पूरे बंसीधर गांव में आयोजित स्वर्गीय पंडित महानारायण क्रिकेट प्रतियोगिता के तीसरे दिन सुजानगंज रेडीगारापुर की टीम विजेता हुई। मंगलवार को क्वार्टर फाइनल मैच में पहला मैच नारीपुर सुजानगंज और कोटपा के बीच हुआ जिसमें सुजानगंज विजेता घोषित किया गया। वहीं दूसरे मैच में बारडीह और रेडीगारापुर के बीच में रोमांचक मैच हुआ जिसमें रेडीगारापुर विजेता घोषित किया गया। इस मौके पर कमेंटेटर रवि शंकर पांडे, भास्कर पांडे अमित अनुज अतुल तथा सारनाथ इंटर कालेज के प्रबंधक महेंद्र कुमार पांडे महर्षि पांडे सहित क्षेत्र के कई लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

दहेज हत्या के अभियुक्त को तीन वर्ष की सजा

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा दहेज हत्या के अभियुक्त सूरजबली पुत्र बराती लाल उर्फ नन्द किशोर कोटार्य निवासी पूरब शरीरा थाना पश्चिम शरीरा को न्यायालय एफटीसी प्रथम द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्त को त्वरित सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से अभियुक्त को तीन वर्ष के सश्रम कारावास एवं 25 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया अभियुक्त द्वारा अर्थ दण्ड न देने पर छः माह के अंतरिक्त करावास की सजा से दण्डित किया गया।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त अंकित पासी पुत्र छेदू पासी निवासी अर्का थाना करारी को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से एक अदद चोरी की मोटर साईकिल नम्बर यूपी 73 डब्लू 1654 बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

पूर्ण हुए निर्माण कार्यों का 15 दिसम्बर तक लोकार्पण करने के डीएम ने दिये निर्देश

विकास कार्यों की समीक्षा बैठक में नहरों की शिल्ट सफाई कराये जाने एवं नहरों में टेल तक पानी पहुंचाये जाने के डीएम ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

बैठक में उपस्थित विभिन्न विभागों के अधिकारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में विकास कार्यो की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने भू-जल संरक्षण, विद्युत लोक निर्माण विभाग सेतु निगम, कृषि, स्वास्थ्य, जल निगम, पंचायती राज, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, आजीविका मिशन, मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), मत्स्य पालन, उद्यान, समाज कल्याण, अल्पसंख्यक कल्याण, कन्या सुमंगला, कौशल विकास मिशन, जिला उद्योग, खादी ग्रामोद्योग एवं निर्माण कार्यों सहित अन्य योजनाओं की विन्दुवार समीक्षा की सिचांई विभाग की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने नहरों की शिल्ट सफाई कराये जाने एवं नहरों में टेल तक पानी पहुंचाये जाने के निर्देश दिये। विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान उन्होंने पंचायत भवनों, विद्यालयों एवं सामुदायिक शौचालयों के बकाये विद्युत बिल का भगुतान कराये जाने के निर्देश जिला पंचायत राज अधिकारी को दिये। निर्माण कार्यों की समीक्षा के करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि जो भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुके हैं उनका लोकार्पण 15 दिसम्बर 2021 तक करा दिया जाय। कृषि विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने किसान सम्मान निधि योजना के तहत छूटे हुए पात्र लाभार्थियों की फीडिंग कराने एवं उन्हें योजना से लाभान्वित कराये जाने के लिए कहा स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने आयुष्मान गोल्डेन कार्ड की प्रगति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए गोल्डेन कार्ड बनाने में और अधिक तेजी लाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत विद्यालयों का निरीक्षण कराकर उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश जिला बेसिक शिक्षाधिकारी को दिये। श्रम विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने कैम्प लगाकर श्रमिकों का ई-श्रम कार्ड बनाये जाने के निर्देश दिये हैं इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी श्रवण कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला विकास अधिकारी एवं समाज कल्याण अधिकारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

मनाया गया शसस्त्र सेना झण्डा दिवस

कौशाम्बी। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मंगलवार 07 दिसम्बर को कलेक्ट्रेट स्थित जिलाधिकारी कार्यालय कक्ष में सशस्त्र सेना झण्डा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने दान दिया तथा उन्होंने कहा कि समस्त विभागाध्यक्ष अधिक से अधिक दान दें। उन्होंने स्मारिका नामक पुस्तक का विमोचन भी किया। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने जिलाधिकारी को झण्डा प्रतीक चिन्ह लगाया। इस अवसर पर जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कैप्टन श्री नजमुल हुदा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे

आधुनिक भारत के निमार्ता थे डॉ भीमराव अम्बेडकर : विजय शुक्ल

कोखराज कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में भारतरत्न महामानव डॉ भीमराव अम्बेडकर का 66 वां परिनिर्वाण दिवस पार्टी कार्यालय उदहिन बुजुर्ग में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान जय भीम जय, भीम एवं बाबा साहब अमर रहें, अमर रहें के तमाम लोगों ने नारे लगाए। साथ ही कार्यक्रम में मौजूद रहे तमाम लोगों ने बाबा साहब के चित्र पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान कार्यक्रम में मौजूद रहे लोगों को संबोधित करते हुए समर्थ किसान पार्टी के सिराथू विधानसभा से उम्मीदवार विजय शुक्ला ने बाबा साहब अम्बेडकर को विश्व महान नेता बताया। उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए विजय शुक्ला ने कहा कि डॉ भीमराव अम्बेडकर आधुनिक भारत के निमार्ता थे। उन्होने संविधान की रचना कर देश के लोगों को असली आजादी प्रदान किया था। आगे कहा कि बाबा साहब अम्बेडकर दलितों, वचितों, समाज के कमजोर वर्गो के लिए आजीवन संघर्ष किया था और एक नए भारत का निर्माण किया। इस अवसर पर बोलते हुए समर्थ किसान पार्टी के नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने कहा कि बाबा साहब अम्बेडकर के संविधान की ताकत ने इस देश के करोड़ों किसानों,मजदूरों, दलितों, शोषितो और गरीबों के लिए समता और समानता का अधिकार दिलाया। देश के प्रथम कानून मंत्री रहे डॉ भीमराव अम्बेडकर ने मजदूरों एवं महिलाओं को अधिकार एवं सम्मान दिलाकर उनके जीवन को एक नई दिशा प्रदान की। इस अवसर पर डॉ राजेंद्र प्रसाद निर्मल, जवाहर लाल दिवाकर, हुबलाल गौतम मास्टर साहब, संतोष कुमार गौतम नेता ने भी लोगों को संबोधित किया। इस अवसर पर राजन शुक्ला, रघुवीर निर्मल, रामू गौतम, घसीटे लाल सरोज, राजेश सरोज, शिव भवन गौतम, अंबेश कुमार गौतम, राम गोपाल गौतम, आनंदी यादव, लाल चन्द मौर्य समेत तमाम लोग मौजूद रहे

भागवत कथा में कृष्ण जन्मोत्सव देख मंत्रमुग्ध हुए भक्तगण

कौशाम्बी। भरवारी कस्बे के नया बाजार मोहल्ले में भागवत कथा का आयोजन कस्बे के व्यापारी गुलाब केसरवानी द्वारा किया गया है भगवत कथा में कथावाचक व्यास अतुल जी महाराज द्वारा भागवत कथा के विभिन्न प्रसंगों पर विस्तार से अमृत वर्षा किया है मंगलवार को प्रभु श्री कृष्ण का जन्मोत्सव का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से मनाया गया है भागवत कथा के आयोजन में श्री कृष्ण जन्मोत्सव से जुड़े बातों पर चर्चा करते हुए उन्होंने राक्षसी पूतना राक्षस कंस के अत्याचार के बारे में वर्णन किया कथा व्यास ने कहा कि प्रभु के चरणों में ही मनुष्य का कल्याण है इस मौके पर राम लखन केसरवानी मोहनलाल पंकज केसरवानी अजय केशरवानी अंकुर केशरवानी हर्ष केशरवानी गोलू सीमा देवी विनय केसरवानी शिव बाबू सहित सैकड़ों महिला पुरुष भक्त जन उपस्थित रहे।

व्यापारी महाकुंभ में उमड़ा व्यापारियों का जनसैलाब

विधानसभा के भावी प्रत्याशी पूर्व चेयर मैन कैलाश केशरवानी एवं गुलाम हुसैन ने अखिलेश यादव को पहनाया चांदी का मुकुट

अखंड भारत संदेश

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को चांदी का मुकुट पहनाते पूर्व चेयरमैन कैलाश केशरवानी गुलाम हुसैन व अन्य

भरवारी कौशाम्बी। लखनऊ में आयोजित समाजवादी पार्टी के व्यापारी महाकुंभ सम्मेलन में व्यापारियों का जनसैलाब उमड़ पड़ा है व्यापारी महाकुंभ सम्मेलन में अपार भीड़ देखकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने व्यापारियों का आभार व्यक्त करते हुए प्रदेश में समाजवादी की सरकार बनाए जाने की अपील करते हुए व्यापारियों को आश्वस्त किया है कि उनकी उत्तरप्रदेश में सरकार आने पर व्यापारी हित के लिए तमाम निर्णय लिए जाएंगे इस मौके पर अखिलेश यादव ने व्यापारियों को संबोधित करते हुए कहा कि सूबे की भाजपा सरकार ने व्यापारियों पर जो जुल्म ज्यादती अत्याचार किया है भाजपा सरकार ने व्यापारियों पर कठोर कानून बनाकर उनका उत्पीड़न किया है सपा सरकार आने पर व्यापारियों को उससे राहत दिलाई जाएगी। लखनऊ में आयोजित ब्यापारी महाकुम्भ सम्मेलन में सिराथू विधानसभा से समाजवादी पार्टी के भावी प्रत्याशी एवम पूर्व चेयर मैन कैलाश केशरवानी एवम चायल विधानसभा से समाजवादी पार्टी के भावी प्रत्याशी गुलाम हुसैन ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को चांदी का मुकुट पहनकर स्वागत किया कैलाश केसरवानी और गुलाम हुसैन के नेतृत्व में कौशांबी जिले के हजारों व्यापारियों ने लखनऊ में आयोजित व्यापारी महाकुंभ सम्मेलन में शामिल होकर सम्मेलन की गरिमा बढ़ाई और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के विचारों को सुनें लखनऊ में आयोजित व्यापारी महाकुंभ से वापस लौटे व्यापारियों ने अखिलेश यादव की नीतियों पर चर्चा करते हुए आने वाले विधानसभा में कौशांबी के तीनों सीटों से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को जीत दिलाने का संकल्प लिया है।

धान क्रय केन्द्र का औचक निरीक्षण करने पहुंचे विधायक संजय गुप्ता

धान क्रय केंद्र पर किसानों के प्रति लापरवाही बरती तो होगी कार्रवाई : विधायक संजय गुप्ता

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने मंगलवार को नेवादा ब्लाक के तिलगोड़ी के धान क्रय केंद्र का औचक निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान विधायक ने क्रय करने आए किसान भाइयों से फीडबैक लेते हुए पूछा कि आप सभी को कोई समस्या तो नहीं आ रही है धान क्रय करने आये उपस्थित किसानों ने मार्केटिंग इंस्पेक्टर मंजुला बौद्ध की प्रशंसा करते हुए बताया कि मार्केटिंग इंस्पेक्टर के सहयोग से हमारा धान क्रय करने में हमें किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आ रही है साथ ही विधायक श्री गुप्ता ने कड़ी चेतावनी भी दी कि अगर किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा या अनियमितता पाई गई तो उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

एसडीएम के अधिकारों का हनन कर जमीन की नाप करने पहुंचा लेखपाल

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के रसूलपुर सोनी गांव की रानी देवी पत्नी राम विशाल मौर्य ने डीएम एसडीएम को दिए शिकायती पत्र में क्षेत्र के लेखपाल पर गंभीर आरोप लगाते हुए उस पर कठोर कार्रवाई की मांग की है अधिकारियों को दिए शिकायती पत्र में रानी देवी ने कहा कि गांव के लेखपाल ने सरकारी तालाब आराजी संख्या 379 380 और 381 पर अवैध कब्जा करा दिया है जिससे सरकारी तालाब पूरी तरह से समाप्त हो गया है उन्होंने कहा कि उनकी भूमि धरी भूमि खाता संख्या 00356 खसरा संख्या 412 वा 413 पर किसी प्रकार का विवाद नहीं है किसी अदालत में मुकदमा विचाराधीन नहीं है किसी अधिकारी ने उनकी भूमि धरी जमीन के नाप जोख का आदेश भी लेखपाल को नहीं दिया है पीड़ित महिला का कहना है कि विपक्षियों से सांठगांठ कर हल्का लेखपाल उनकी भूमि की जांच करने पहुंच गए हैं जो नियम विरुद्ध है उन्होंने कहा कि बिना नियम के काम करने वाले लेखपाल विवाद की स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं उनका कहना है कि मेरे सामने आराजी संख्या 418 आबादी दर्ज है और आबादी वालों को मेरी भूमि धरी जमीन में नियम विरुद्ध कब्जा कराने के लिए मंझनपुर तहसील के हल्का लेखपाल सौरभ मेरी जमीन पर नाप जोक करने सोमवार को पहुंच गए हैं जमीन दूसरे को कब्जा कराने की नियत रखने वाले लेखपाल ने विरोधियों से मोटी रकम वसूली की है नियम विरुद्ध जमीन में नाप करने वाले लेखपाल के कारनामों पर मुकदमा दर्ज करा कर निलंबित किए जाने की मांग पीड़ित महिला ने की है।

लेखपाल की सांठगांठ से सरकारी तालाब पर कब्जा

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील के रसूलपुर सोनी गांव में तालाब भूमि संख्या 379, 380 और 381 पर लेखपाल के साठगांठ पर कब्जा करने वालों से तालाबी भूमि बेदखल कराए जाने तालाब की भूमि के कब्जा धारकों पर मुकदमा दर्ज कराए जाने तालाबी भूमि की सुरक्षा न करने वाले लेखपाल के कारनामे की जांच कराते हुए इन्हें बर्खास्त किए जाने की मांग महिला रानी देवी ने डीएम एसडीएम को पत्र देकर किया है।

योगी की सरकार आने के बाद प्रदेश ने खोई हुई संस्कृति विरासत को पुन : प्राप्त किया : भाजपा

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम में उपस्थित भाजपा नेता

कौशाम्बी। भाजपा जिला कार्यालय मे एक संगठनात्मक दृष्टिकोण से बैठक संपन्न हुई और डा.भीम राव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया इसी क्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि सरोज कुशवाहा ने कहा जिस तरह से विकास के नाम पर सपा बसपा व कांग्रेस की सरकार ने सिर्फ अपने परिवार को अपराधियों का विकास किया है-लेकिन उत्तर प्रदेश में जब से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार आई है तब से कानून व्यवस्था सिद्धण और मजबूत हुई है सभी क्षेत्रों का विकास हुआ है सपा बसपा और कांग्रेस की सरकार में हमेसा उपेक्षित रहा प्रदेश सरकार की योजनाओं का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन कराया है जिसमे देश का सबसे बड़ा प्रदेश उत्तर प्रदेश लंबे समय तक भ्रष्टाचार माफिया आतंकवाद तुष्टीकरण आदि अनेकों प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त था वक्ताओ ने कहा कि पूर्व की सरकार ने प्रदेश के विकास का ध्यान नहीं दिया केवल अपने वोट बैंक के विकास के लिए तुष्टिकरण की राजनीति की लेकिन केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज की सरकार आने के बाद प्रदेश ने अपनी खोई हुई संस्कृति विरासत को पुनः-प्राप्त किया। इसी क्रम में लल्लू लाल कुशवाहा ने भी मजबूती से पक्ष रखा और सपा बसपा कांग्रेस को उत्तर प्रदेश से मुक्त करने की बात कही और जनता से अपील की है-साथ में जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने-2022-के चुनाव को एक निष्पक्ष चुनाव बताया उन्होंने कहा कि कौशाम्बी की तीनों विधानसभा सीट को जीतकर भारतीय जनता पार्टी की झोली में डालने का काम किया जाएगा साथ ही सभी मण्डल अध्यक्षों से आगामी कार्यक्रमों की सूचना दी। उपाध्यक्ष धर्मराज मौर्या ने सभी का आभार जताया और कहा निश्चित ही कौशाम्बी की सीट तीनों निकलेगी और संगठन को मजबूत किया जाएगा प्रदेश में एक बार फिर सरकार बनेगी। इसी क्रम में जिला उपाध्यक्ष आशीष केसरवानी ने भी मजबूती से पक्ष रखते हुए सरकार की उपलब्धियों को बताया और कहा निश्चित ही भाजपा की सरकार बनेगी उसी में जनता का और हम सभी का विकास होगा। उन्होंने कहा कि विकास निश्चित होगा बैठक में मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरोज कुशवाहा प्रभारी प्रभा शंकर पाण्डे प्रभारी लल्लूलाल कुशवाहा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी संचालन जिला महामंत्री जयप्रकाश विश्वकर्मा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष संगीता सरोज तथा सभी मंडल अध्यक्ष और आईटी विभाग के संयोजक सत्यम केसरवानी गोलू सिंह पटेल जिला मीडिया प्रभारी इत्यादि वरिष्ठ सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

छः वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा छः वारण्टी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर उनका चालान न्यायालय कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त अक्षय कुमार पुत्र स्व० रामनरायण यादव पुत्र निवासी मखऊपुर थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त मैकूलाल पुत्र स्व० घुघरी पासी निवासी छेकापुर व बद्री उर्फ बल्ली पुत्र रामदासपुर निवासी सीतापुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना करारी पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त मकसूद पुत्र रहीस निवासी रक्सवारा थाना करारी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त राजेन्द्र पुत्र मसुरियदीन निवासी नौरंग का डेरा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना सरायअकिल पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त हीरालाल पासी पुत्र गंगादीन निवासी मवई मजरा कनैली थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

धनवान व्यक्ति वही है जो अपने तन, मन, धन से सेवा भक्ति करे : अखिलेश जी महाराज

कौशाम्बी। मंझनपुर मुख्यालय के साईं धाम में श्रीमद् भगवत कथा के सातवें दिन श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया गया। राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित श्री अखिलेश जी महाराज ने कहा कि धनवान व्यक्ति वही है जो अपने तन, मन, धन से सेवा भक्ति करे वही आज के समय में धनवान व्यक्ति है। परमात्मा की प्राप्ति सच्चे प्रेम के द्वारा ही संभव हो सकती है। मंझनपुर मुख्यालय के साईं धाम में श्रीमद् भागवत कथा के आयोजन के सातवें दिन कथावाचक पंडित अखिलेश जी महाराज ने पूतना चरित्र का वर्णन करते हुए बताया कि पूतना राक्षसी ने बालकृष्ण को उठा लिया और स्तनपान कराने लगी। श्रीकृष्ण ने स्तनपान करते-करते ही पूतना का वध कर उसका कल्याण किया। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कथा वाचक अखिलेश जी महाराज ने कहा कि माता यशोदा जब भगवान श्री कृष्ण को पूतना के वक्षस्थल से उठाकर लाती है उसके बाद पंचगव्य गाय के गोबर गोमूत्र से भगवान को स्नान कराती है। सभी को गौ माता की सेवा, गायत्री का जाप और गीता का पाठ अवश्य करना चाहिए। गाय की सेवा से 33 कोटि देवी देवताओं की सेवा हो जाती है। भगवान व्रजरज का सेवन कर-के यह दिखला रहे हैं कि जिन भक्तों ने मुझे अपनी सारी भावनाएं व कर्म समर्पित कर रखें हैं वे मेरे कितने प्रिय हैं। भगवान स्वयं अपने भक्तों की चरणरज मुख के द्वारा हृदय में धारण करते हैं। उन्होंने कहा कि पृथ्वी ने गाय का रूप धारण करके श्रीकृष्ण को पुकारा तब श्रीकृष्ण पृथ्वी पर आये हैं। इसलिए वह मिट्टी में नहाते, खेलते और खाते हैं ताकि पृथ्वी का उद्धार कर सकें। कथा को आगे बढ़ाते हुए कथावाचक ने कहा कि गोपबालकों ने जाकर यशोदामाता से शिकायत कर दीझह्लमां तेरे लाला ने माटी खाई है यशोदामाता हाथ में छड़ी लेकर दौड़ी आयीं। अच्छा खोल मुख। माता के ऐसा कहने पर श्रीकृष्ण ने अपना मुख खोल दिया। श्रीकृष्ण के मुख खोलते ही यशोदाजी ने देखा कि मुख में चर-अचर सम्पूर्ण जगत विद्यमान है। इसी प्रकार आचार्य ने कृष्ण की बाल लीलाओं को आगे विस्तार पूर्वक बताया।

स्नान कर रही युवती का वीडियो बना कर किया वायरल

विरोध करने पर युवक ने युवती और उसकी सास को बेरहमी से पीटा

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के मलाक नागर विराहिम बाग गांव में घर के भीतर स्नान कर रही युवती का अर्धनग्न वीडियो बना कर गांव के युवक ने वायरल कर दिया मामले की जानकारी होने पर युवती ने इस बात का विरोध किया तो युवक ने युवती व उसकी सास को जमकर पीट दिया पीड़िता युवती ने मामले की सूचना पुलिस को दी है पुलिस ने जांच के बाद कार्रवाई करने का आश्वासन युवती को दिया है।

जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र मलाक नागर विराहिम बाग गांव का एक युवक मजदूरी करता है जिससे वह मजदूरी करने घर के बाहर चला जाता है उसकी पत्नी व मां दिन में घर पर रहती हैं। आरोप है कि सोमवार की शाम उसकी पत्नी काम खत्म करने के बाद घर के बरामदे में स्नान करने लगी इसी बीच पड़ोस के एक युवक ने उसका नहाते हुए अर्धनग्न वीडियो बना लियां। अर्धनग्न वीडियो बनाने के बाद युवक ने वायरल भी कर दिया। इसकी जानकारी युवती को हुई तो उसके होश उड़ गए। युवक की इस हरकत का विरोध करने युवती सास के साथ युवक के घर पहुंची। आरोप है कि युवक ने वहां उसकी पिटाई शुरू कर दी। आरोप है कि इसी बीच युवक ने युवती के ब्लाउज फाड़ दिए हैं बीच बचाव के लिए आई सास को भी पीट दिया। शोरगुल सुनकर जुटे आसपास के लोगों ने किसी तरह मामले को शांत करा दिया। पीड़ित युवती ने मामले की तहरीर चरवा पुलिस को दी है। उसके मुताबिक पूर्व में भी युवक ने इसी प्रकार की हरकत की थी।

चारवा कोतवाल अरविंद त्रिवेदी की विदाई समारोह में उनके कार्यों की सराहना

कोतवाल अरविंद त्रिवेदी ने कहा कि आप सब लोगों का जो प्यार अपनापन और विभागीय कार्यों में सहयोग मिला है उसे भुलाया नहीं जा सकता

अखंड भारत संदेश

चरवा कोतवाल की विदाई में मौजूद गणमान्य व्यक्ति

कौशाम्बी। चरवा कोतवाली के कोतवाल अरविंद त्रिवेदी को पुलिस अधिकारियों ने चरवा कोतवाली से स्थानांतरित कर दिया है उनके स्थानांतरण के बाद चरवा कोतवाल के सम्मान में विदाई कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम में अरविंद त्रिवेदी कोतवाल को माल्यार्पण कर उनका जोरदार स्वागत किया गया इस मौके पर मौजूद क्षेत्र के संभ्रांत लोगों ने कहा कि चरवा कोतवाल अरविंद त्रिवेदी का कार्यकाल बेहद सराहनीय रहा है क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने कहा कि अरविंद त्रिवेदी के कार्यकाल में अनुशासन और न्याय पूर्ण तरीके से पीड़ितों के समस्याओं का समाधान हुआ है आम जनमानस अरविंद त्रिवेदी के कार्यों से संतुष्ट रही इस मौके पर कोतवाल अरविंद त्रिवेदी ने कहा कि आप सब लोगों का जो प्यार अपनापन और विभागीय कार्यों में सहयोग मिला है उसे भुलाया नहीं जा सकता है उन्होंने क्षेत्र की गणमान्य जनता पत्रकारों और विभागीय पुलिस जनों का आभार व्यक्त किया है इस मौके पर सब इंस्पेक्टर परवेज अली अनिल कुमार सिंह चंद्रबली सरोज आदित्य कुमार तिवारी बलराम सिंह वीर प्रताप सिंह मुंशी शशि यादव धर्मराज यादव दीवान ओमप्रकाश गौतम हेड कांस्टेबल रमेश चंद सरोज रत्नेश सिंह कांस्टेबल सुमित यादव भानु प्रताप सिंह अमित यादव उपेंद्र चौहान सूरज जयसवाल अर्जुन सिंह अर्जुन चौधरी परमेश अजय यादव अंकुर कुशवाहा गौरव साहू महिला कांस्टेबल शिवानी चौधरी क्षमा शर्मा प्रीति उपाध्याय सीमा सरोज राखी पत्रकार हीरालाल कुशवाहा शिव मोहन भारतीय गणेश साहू अमित विश्वकर्मा मिश्रीलाल अनूप केशरवानी श्रीकांत यादव चंद्रभान सहित तमाम गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

सम्पादकीय

नगालैंड की घटना के सबक

नगालैंड में सुरक्षाबलों की गोलीबारी से एक जवान समेत 15 लोगों की मौत से एक बार फिर केंद्र सरकार की नीतियों, सुरक्षा बलों की गतिविधियों और खुफिया एजेंसियों की सक्षमता पर सवाल खड़े होते हैं। अगर संवेदनशील सरकार होती तो अब तक गृहमंत्री इस्तीफे की पेशकश कर चुके होते, लेकिन मौजूदा सरकार में गृहमंत्री बयान देने में यकीन रखते हैं। हालांकि उनके बयान देने से न मृत लोग जिंदा हो सकते हैं, न सुरक्षा बलों और आम जनता के बीच विश्वास बहाली हो सकती है। नगालैंड की घटना इस बात का प्रमाण है कि पूर्वोत्तर में हिंदुत्ववादी एजेंडे को लागू कर भाजपा ने अपने पैर तो पसार लिए, लेकिन यहां के नाजुक हालात संभालने में केंद्र सरकार पूरी तरह विफल रही है। पहले असम-मिजोरम के बीच सीमा विवाद को लेकर हिंसक संघर्ष हुआ, जो आजाद देश में अभूतपूर्व घटना थी। इसके बाद त्रिपुरा में बांग्लादेश मामले के कारण सांप्रदायिक तनाव कायम हुआ और अब नगालैंड में सुरक्षा बलों ने उग्रवाद से लड़ाई के नाम पर अपने ही नागरिकों को निशाना बनाया, पहले भूल से और उसके बाद दमनकारी अंदाज में। 4 दिसंबर को नगालैंड के मोन जिले के तिरू और ओटिंग गांव के कुछ लोग कोयला खदान में काम करने गए। लेकिन शाम तक छह युवक वापस नहीं लौटे, तो उनके परिजनों और गांव के लोगों ने तलाश शुरू की। ओटिंग में ही एक पिकअप वैन में 6 युवकों के शव लथपथ पड़े मिले। पहले तो माजरा समझ नहीं आया, बाद में पता चला कि यहां पर सुरक्षा बलों ने फायरिंग की थी। इसके बाद वहां बड़ी संख्या में ग्रामीण इकज हो गए। नाराज, बेकाबू भीड़ ने सुरक्षा बलों की गाड़ियों में आग लगा दी। सुरक्षा बलों ने भीड़ को समझाने की कोशिश की लेकिन उग्र भीड़ शांत नहीं हो रही थी। इस दौरान दोबारा फायरिंग हुई जिसमें फिर कुछ लोगों की मौत हो गई।

गौरतलब है कि मोन जिले की सीमाएं म्यांमार से मिलती हैं और प्रतिबंधित संगठन नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड-के (एनएससीएन-के) के युंग ओंग धड़े की गतिविधियां यहीं से संचालित होती हैं। सेना को खुफिया सूचना मिली थी कि यहां कोई उग्रवादी गतिविधि की आशंका है, जिसके आधार पर सेना ने कार्रवाई की। लेकिन इस कार्रवाई में अपने ही नागरिकों को सेना ने निशाना बनाया। इस घटना के बाद से पूरे इलाके में रोष की लहर दौड़ना स्वाभाविक है। जनता के आक्रोश को देखते हुए अब यहां कर्फ्यू लगा दिया गया है, कई जगह इंटरनेट पर पाबंदियां हैं। नगालैंड पुलिस ने भारतीय सेना के 21 पैरा विशेष बलों के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए प्राथमिकी दर्ज की है। प्राथमिकी में नगालैंड पुलिस ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पैरा स्पेशल बलों ने स्थानीय पुलिस को सूचित नहीं किया था, न ही कोई पुलिस गाइड लिया था। सेना अपनी कार्रवाई के पीछे 'गलत पहचान' को कारण बता रही है, लेकिन प्राथमिकी में पुलिस ने 'सुरक्षा बलों की मंशा नागरिकों की हत्या और घायल करना' बताया है। नागा स्टूडेंट्स फेडरेशन ने प्रदेश में पांच दिनों के शोक का ऐलान किया है। नगालैंड के मुख्यमंत्री नेफियो रियू ने इस घटना पर दुख जताते हुए एसआईटी की जांच की घोषणा की है और मृतकों के परिजनों के लिए पांच-पांच लाख के मुआवजे का ऐलान किया है। सेना ने भी घटना को खेदजनक बताते हुए 'कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी' का आदेश दिया है। नगालैंड की इस घटना के बाद एक बार फिर से पूर्वोत्तर से सशस्त्र बल (विशेषाधिकार) अधिनियम, 1958 यानी अफ्स्पा को वापस लेने की मांग जोर पकड़ने लगी है। पहले ही कई नागरिक संगठन और इलाके के राजनेता वर्षों से अधिनियम की आड़ में सुरक्षाबलों पर ज्यादती का आरोप लगाते हुए इस कानून को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। इस कानून के तहत सेना के जवानों को कानून तोड़ने वाले व्यक्ति पर गोली चलाने का भी अधिकार होता है, इसलिए इसमें मानवाधिकार हनन की आशंका हमेशा बनी रहती है। अमूमन अफ्स्पा के कारण सैन्यबलों की ज्यादतियों को राजनैतिक शह मिल जाती है, लेकिन नगालैंड में पुलिस ने ही सैन्य बलों पर हत्या के आरोप लगाए हैं। मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड संगमा ने अफ्स्पा को हटाने की मांग की है। नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (एनईएसओ) ने कहा कि अगर केंद्र पूर्वोत्तर के लोगों के कल्याण और कुशलता के बारे में चिंतित है तो उसे कानून को निरस्त करना चाहिए। वहीं ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (एएएसयू) के मुख्य सलाहकार समुज्जल कुमार भट्टाचार्य ने कहा कि नागरिकों की सुरक्षा के लिए कठोर और अलोकतांत्रिक अफ्स्पा को निरस्त किया जाना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों के इन लोगों की सलाह पता नहीं केंद्र सरकार तक पहुंचती है या नहीं। वैसे यह तय है कि सरकार का मनमाना रवैया और सब कुछ ठीक होने का ऊपरी दिखावा कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर तक आम जनजीवन में उथल-पुथल मचा चुका है। सशक्त सरकार की असली ताकत सैन्य बलों से नहीं, जनता की सुख-शांति से होती है।

ममता बनर्जी के प्रयासों को हल्के में लेना कांग्रेस को भारी पड़ सकता है

ललित गर्ग

ममता बनर्जी को वर्तमान में कांग्रेस की गिरती साख एवं राहुल गांधी के शिथिल नेतृत्व के कारण ही कहना पड़ा है कि अब संप्रग जैसा कुछ नहीं रह गया है, उससे यह नए सिरे से स्पष्ट हो गया कि वह खुद के नेतृत्व में भाजपा का विकल्प तैयार करने को लेकर गंभीर हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एवं चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर के कांग्रेस पार्टी और विशेषकर राहुल गांधी को लेकर दिये गये ताजा कटाक्षपूर्ण बयान एक राष्ट्रीय पार्टी की लगातार गिर रही साख एवं बिखराव को दशार्ते हैं। इसका सीधा मतलब है कि विपक्षी एकता के मामले में न केवल ममता बल्कि अन्य कुछ दल कांग्रेस को अनुपयोगी और अप्रासंगिक मानकर चल रहे हैं। यह असामान्य स्थिति है कि एक क्षेत्रीय दल देश के सबसे पुराने राष्ट्रीय दल की अहमियत को इस तरह खारिज करे। अन्य दल ही नहीं, बल्कि पार्टी के बलिदानी, वफादार एवं कद्दावर नेता भी द्वंद्व एवं घुटन की स्थिति में हैं, तभी पार्टी के भीतर जी-23 असंतुष्टों का समूह बना। कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं की यह खुली बगावत एवं विपक्षी दलों के तीखे तेवर पार्टी के भविष्य पर घने अंधेरों की आहट है।

ममता बनर्जी को वर्तमान में कांग्रेस की गिरती साख एवं राहुल गांधी के शिथिल नेतृत्व के कारण ही कहना पड़ा है कि अब संप्रग जैसा कुछ नहीं रह गया है, उससे यह नए सिरे से स्पष्ट हो गया कि वह खुद के नेतृत्व में भाजपा का विकल्प तैयार करने को लेकर गंभीर हैं। पता नहीं उनकी सक्रियता क्या रंग लाएगी, लेकिन इतना अवश्य है कि कांग्रेस को उनसे चिंतित होना चाहिए। अभी तक विपक्षी एकता की जो भी कोशिश होती रही है, उसमें कहीं-न-कहीं कांग्रेस भी शामिल रही है। खुद ममता बनर्जी भी ऐसी कोशिश का हिस्सा रही हैं, लेकिन अब वही कांग्रेस को किनारे कर रही हैं। इस तरह की स्थिति एकाएक नहीं बनी है, अकारण नहीं बनी है, उसके कारणों में कहीं-न-कहीं कांग्रेस का अप्रभावी नेतृत्व है। अनेक राजनीतिक दलों का भविष्य बनाने एवं राजनीति की धड़कनों पर पकड़ रखने वाले प्रशांत किशोर ने विपक्ष के कथित नेतृत्व को लेकर कांग्रेस की दावेदारी पर सवाल खड़े करते हुए कहा कि कांग्रेस जिस विचार और जगह का प्रतिनिधित्व करती है वो एक मजबूत विपक्ष के लिए अहम है, लेकिन कांग्रेस का नेतृत्व एक विशेष व्यक्ति का दैवीय अधिकार नहीं, खासकर जब पार्टी पिछले 10 सालों में अपने 90 प्रतिशत चुनावों में हार का सामना कर चुकी है। प्रशांत किशोर के बयान हों या पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की प्रतिक्रियाएं, यह सब कांग्रेस के राहुल गांधी पर ही केन्द्रित हैं। ममता ने राजनीतिक जमीन बनाने के लिये जिस त्याग, बलिदान, समर्पण एवं जनता पर पकड़ की जरूरत को व्यक्त किया, उसी के सन्दर्भ में उन्होंने कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के विदेश दौरों को लेकर सवाल उठाए हैं। ममता बनर्जी ने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा था कि जब आधा टाइम विदेश में रहेंगे तो राजनीति कैसे करेंगे प्रशांत किशोर राहुल गांधी और कांग्रेस को लगातार घेरते रहे हैं। पिछले दिनों, सोशल मीडिया पर एक सवाल-जवाब के सत्र के दौरान उन्होंने कहा था कि आने वाले सालों में बीजेपी, भारतीय राजनीति के केंद्र में बनी रहेगी चाहे वह जीते या चाहे हारे। प्रशांत किशोर ने कहा था कि जैसे शुरूआती 40 वर्षों में कांग्रेस के साथ हुआ, वैसा ही भाजपा के साथ है। उन्होंने कहा था, ह्वदिक्कत राहुल गांधी के साथ है कि वे सोचते हैं कि बस कुछ वक्त की बात है और लोग बीजेपी को उखाड़ फेकेंगे। तो, ऐसा अभी नहीं होने जा रहा है ह्व यह सच भी है। लेकिन कांग्रेस को अपनी खोयी जमीन को पाने के लिये सीधा-सरल गणित नहीं बैठाना है, बल्कि कठोर परिश्रम करना होगा, लेकिन ऐसा होता हुआ नहीं दिख रहा है। कोरी बयानबाजी एवं नरेन्द्र मोदी के विरोध से खोयी जमीन नहीं मिलती, बल्कि वह और रसातल में जायेगी। कांग्रेस नेतृत्व ने अपनी दिशाहीन राजनीति से न केवल अपनी पार्टी को कमजोर किया है, बल्कि विपक्ष को भी नुकसान पहुंचाया है। कांग्रेस को पर्दे के पीछे से चला रहे राहुल गांधी की नेतृत्व क्षमता को लेकर उनके सहयोगी-समर्थक चाहे जो दावा करें, वह हर दृष्टि से निष्प्रभावी हैं। राजनीति में इतना लंबा समय बिताने के बाद भी वह बुनियादी राजनीतिक परिपक्वता हासिल नहीं कर सके हैं। उनके लिए राजनीति का एक ही मकसद है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कोसना। उन्होंने सस्ती नारेबाजी को ही राजनीति समझ लिया है। आज तृणमूल कांग्रेस प्रमुख एवं प्रशांत किशोर के बदले हुए स्वर हैं तो इसके लिए एक बड़ी हद तक कांग्रेस ही जिम्मेदार है। वह अपनी दयनीय दशा और बिखराव के लिए अपने अलावा अन्य किसी को दोष नहीं दे सकती।

विडम्बना तो यह है कि कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व अपनी इस दुर्दशा पर न चिन्तन-मंथन करता है और न अपनी कमियों एवं गलतियों को स्वीकारता है। राहुल ही नहीं, कुछ इसी तरह की राजनीति प्रियंका गांधी भी कर रही हैं। भले ही कांग्रेस में राहुल और प्रियंका को करिश्माई नेता बताने वालों की कमी न हो, लेकिन सच यही है कि ये दोनों नेता अपनी तमाम सक्रियता के बावजूद कहीं कोई छाप नहीं छोड़ पा रहे हैं। वास्तव में इसीलिए कांग्रेस तेजी के साथ रसातल में जा रही है। यह कांग्रेस के लगातार कमजोर होते चले जाने का ही कारण है कि उसके नेता अन्य दलों की शरण में जा रहे हैं। पंजाब एवं राजस्थान के कांग्रेसी तनाव के लम्बे समय से हल नहीं हो पाने के पीछे राहुल की अपरिपक्व राजनीतिक सोच ही है। राहुल गांधी को चाहिए था कि पंजाब के मामले में सिद्धू को निर्देश व सलाह देते कि राज्य में जो स्थिति उन्होंने बनाई है, उसका हल भी खुद ही निकालें। ऐसे नेताओं पर नकेल-कसना पार्टी का ही काम है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा लगातार शह-मात का खेल कांग्रेस को राज्य में कमजोर कर रहा है। यदि राहुल और प्रियंका ने सचिन पायलट को ठोस आश्वासन दिए थे, तो उन्हें तुरंत पूरा करना चाहिए और ऐसे प्रयास करने चाहिए कि कांग्रेस राज्य में 2023 में वापसी करे। कोई भी व्यक्ति संगठन से बड़ा नहीं है और यह संदेश साफ शब्दों में जाना चाहिए। पार्टी में संवादहीनता चरम पर है। अब जब कोविड-19 का प्रकोप कम होता लग रहा है, तब सोनिया गांधी को तुरंत ऑल इंडिया कांग्रेस समिति का अधिवेशन बुलाकर विचारधारा व नेतृत्व के मामले को पार्टी के समक्ष रखना चाहिए। इस कदम से कांग्रेस व नेहरू-गांधी परिवार और मजबूत, दृढ़ निश्चयी के साथ-साथ राजनीतिक लक्ष्यों के प्रति सजग व प्रेरित नजर आता, लेकिन ऐसा न होना पार्टी के अस्त होते जाने का ही संकेत है। कांग्रेस की राजनीति की सोच एवं संस्कृति सिद्धान्तों, आदर्शों और निस्वार्थ को ताक पर रखकर सिर्फ सत्ता, पुत्र-मोह, राजनीतिक स्वार्थ, परिवारवाद एवं सम्पदा के पीछे दौड़ी, इसलिये आज वह हर प्रतिस्पर्धा में पिछड़ती जा रही है। कांग्रेस आज उस मोड़ पर खड़ी है जहां एक समस्या समाप्त नहीं होती, उससे पहले अनेक समस्याएं एक साथ फन उठा लेती हैं। कांग्रेस के भीतर एवं बाहरी विरोधाभास नये-नये चेहरों में सामने आ रही है। कांग्रेस की इस दुर्दशा एवं लगातार रसातल की ओर बढ़ने का सबसे बड़ा कारण राहुल गांधी हैं। वह पार्टी एवं राजनीतिक नेतृत्व क्या देश की गरीब जनता की चिन्ता एवं राष्ट्रीय समस्याओं को मिटायेगी जिसे पुत्र के राजनीतिक अस्तित्व को बनाये रखने की चिन्ताओं से उबरने की भी फुरसत नहीं है। असंतुष्ट नेता एवं विपक्षी दल इस नतीजे पर भी पहुंच चुके हैं कि राहुल के रहते कांग्रेस में कोई सूरज उग नहीं पाएगा। जो लोग प्रियंका गांधी से बड़ी उम्मीद लगाए थे, वे और ज्यादा निराश हैं। भाई-बहन किसी गरीब से मिल लें, किसी गरीब के साथ बैठकर खाना खा लें, किसी पीड़ित को सांत्वना देने पहुंच जायें तो समझने लगते हैं कि एक सौ तीस करोड़ लोगों का दिल जीत लिया है। वे अपने बयानों, कार्यों की निंदा या आलोचना को कभी गंभीरता से लेते ही नहीं। उनकी राजनीति ने इतने मुखौटे पहन लिये हैं, छलनाओं, दिखावे एवं प्रदर्शन के मकड़ी जाल इतने बुन लिये हैं कि उनका सही चेहरा पहचानना आम आदमी के लिये बहुत कठिन हो गया है। प्रश्न है कि इन स्थितियों के चलते कांग्रेस कैसे मजबूत बनेगी कैसे पार्टी नयी ताकत से उभर सकेगी कांग्रेस को राष्ट्रीय धर्म एवं कर्त्तव्य के अलावा कुछ न दिखे, ऐसा होने पर ही पार्टी को नवजीवन मिल सकता है, अन्यथा अंधेरा ही अंधेरा है।

मोदी पूर्वांचल को समर्पित करेंगे चिकित्सा का सबसे बड़ा मंदिर

डॉ. महेंद्र कुमार सिंह

पूर्वांचल के लोगों की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की सबसे बड़ी उम्मीद को पूरा करने वाला मंदिर बन कर तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 07 दिसम्बर को गोरखपुर एम्स, नागरिकों को समर्पित करने वाले हैं। पूर्वांचल ही नहीं, बिहार एवं पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के लोगों के लिए भी यह चिकित्सा संस्थान वरदान सिद्ध होने वाला है, जिन्हें दिल्ली एम्स के फुटपाथों पर सर्द रातों, तपती गर्मी और तूफानी बारिश में भीग कर अपने नंबर का इंतजार करने को मजबूर होना पड़ता रहा है। दशकों के राजनीतिक परिदृश्य को अगर देखें तो सिर्फ दो राजनेता ने उत्तर प्रदेश के पूर्व में स्थित इस पिछड़े क्षेत्र के लोगों की कराह सुनी और समझी है। 1998 से लगातार गोरखपुर से सांसद रहे गोरखपीठ के महंत योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में एम्स स्थापित करने की मांग अनेक बार संसद में उठाई मगर उनकी आवाज 2014 में सुनी गई, जब देश की बागडोर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संभाली। गोरखपुर में एम्स मुख्यमंत्री योगी की वर्षों की तपस्या का प्रतिफल है। प्रधानमंत्री मोदी गोरखपुर तथा आसपास के लोगों, खासकर किसानों को एक और सौगात देंगे। मोदी करीब 8603 करोड़ की लागत से 600 एकड़ भूमि में स्थापित नई फर्टिलाइजर फैक्टरी का भी शुभारंभ करेंगे। गोरखपुर एम्स शुरू होने से उच्च चिकित्सा सेवाओं के लिए पूरे क्षेत्र के लोगों को दिल्ली, मुम्बई में भटकना नहीं पड़ेगा और न ही महंगे निजी कॉरपोरेट हॉस्पिटल में जाने को मजबूर होना पड़ेगा।

कई सर्वे और स्टडीज साबित करती हैं कि स्वास्थ्य पर होने वाले खर्चों की वजह से एक बहुत बड़ी जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे चली जाती है। पिछड़ा पूर्वांचल क्षेत्र भी इसी चक्रव्यूह में फंसा हुआ था। अब एक नई उम्मीदों का आकाश पूर्वांचल वासियों के सामने है। चिकित्सा और शिक्षा को नई ऊंचाई प्रदान करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री मोदी ने 22 जुलाई 2016 को गोरखपुर एम्स का शिलान्यास किया था। करीब 1012 करोड़ की लागत वाले तथा 112 एकड़ में विस्तृत इस चिकित्सा संस्थान में ओपीडी का उद्घाटन फरवरी 2019 को किया गया और इस समय 16 सुपर स्पेशलिटी विभागों की ओपीडी शुरू हो चुकी है। उद्घाटन के बाद 300 बेड का अस्पताल पूरी तरह से कार्य करना शुरू कर देगा। इसे 750 बेड तक विस्तारित करने की योजना है। स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए तरसता पूर्वांचल दशकों से राजनीतिक उपेक्षा का शिकार रहा। करीब चार दशकों तक जापानी इंसेफ्लाइटिस यहां के हजारों बच्चों को हर वर्ष निगलता रहा। सरकारें बदलती रहीं मगर किसी ने सुध तक नहीं ली। नवजात शिशुओं को खोने की अपार पीड़ा की लड़ाई योगी ने सांसद के रूप में संसद से लेकर सड़क तक लड़ी पर तत्कालीन नीति निमार्ताओं के कानों तक आवाज नहीं पहुँची। वर्ष 2017 में योगी आदित्यनाथ के प्रदेश का मुख्यमंत्री बनते ही परिदृश्य बदलने लगा। उन्होंने इंसेफ्लाइटिस के खिलाफ न सिर्फ जंग छेड़ी, बल्कि समन्वित प्रयासों से इस महामारी पर नियंत्रण कर लिया गया। यह पूर्वांचल के लोगों के लिए बड़ा सुअवसर है कि प्रधानमंत्री मोदी सात दिसम्बर को गोरखपुर के बाबा राघवदास मेडिकल कॉलेज में स्थापित रीजनल मेडिकल रिसर्च सेंटर की नौ लैब्स को भी राष्ट्र को समर्पित करेंगे। ये लैब्स जापानी इंसेफ्लाइटिस के कारगर परीक्षण और शोध पर कार्य करेंगी। यह राज्य स्तरीय वायरस प्रशिक्षण लैब कोविड-19 की जांच और शोध के साथ अन्य विषाणु जनित बीमारियों पर शोध कार्य करेगा।

अब प्रदेश में दो एम्स संचालित हैं। एक गोरखपुर और दूसरा रायबरेली में। वर्ष 2007 में रायबरेली एम्स की स्वीकृति मिली लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव इसके संचालन में देरी हुई। मोदी-योगी की जोड़ी बनते ही प्रदेश में स्थापित दोनों एम्स विश्वस्तरीय मानक से सुसज्जित हुए और प्रदेश में स्वास्थ्य सेवा के नए युग की शुरूआत हुई। इस जोड़ी को ही एम्स के संचालन का श्रेय जाता है। वहीं, जिस बीमारी की आहट मात्र से ही पूरा परिवार हिल जाता हो, उस कैंसर के इलाज के लिए वाराणसी में देश का दूसरा बड़ा कैंसर हॉस्पिटल 'महामना कैंसर संस्थान' भी मरीजों के इलाज के लिए खोल दिया गया है। 2017 में प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद से स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ध्यान दिया गया। योगी सरकार आज 'एक जनपद एक मेडिकल कॉलेज' के मंत्र के साथ आगे बढ़ रही है। प्रदेश के 59 जनपदों में कम से कम एक मेडिकल कॉलेज क्रियाशील है। 16 जनपदों में ढढढ मॉडल पर मेडिकल कॉलेज की स्थापना प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। प्रदेश में पहले आयुष विश्वविद्यालय महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय का गोरखपुर में शिलान्यास किया गया और इसका निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। लखनऊ में अटल बिहारी वाजपेयी चिकित्सा विश्वविद्यालय का निर्माण प्रारंभ हो चुका है। लोगों को चिकित्सा पर होने वाले खर्चों से राहत देने के लिए प्रदेश में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (आयुष्मान भारत) में 6 करोड़ 47 लाख लोगों को बीमा कवर दिया गया है। इसके साथ ही 42.19 लाख लोगों का मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में बीमा कवर सुनिश्चित किया गया है। चिकित्सा क्षेत्र के समग्र विकास के लिए स्वास्थ्य शिक्षा पर भी योगी सरकार विशेष ध्यान दे रही है। प्रदेश में एमबीबीएस की 938 सीटें बढ़ाई गई हैं तथा केंद्र सरकार से 900 सीटें बढ़ाए जाने की अनुमति शीघ्र मिलने की संभावना है। एमडी एवं एमएस में 127 सीटों की वृद्धि की गई है। चिकित्सकों की सेवानिवृत्ति आयु 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी गई है। इसके साथ ही 1104 भारतीय जन औषधि केन्द्रों के माध्यम से सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण दवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

योगी सरकार के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि आज नेशनल इंस्टिट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) की इंडिया रैंकिंग में एसजीपीजीआई 5वें, बीएचयू 7वें, केजीएमयू, लखनऊ 9वें तथा एएमयू 15वें स्थान पर है।योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश ने कोरोना महामारी का बेहतर प्रबंधन किया, टीकाकरण में भी अग्रणी भूमिका में है। 16 करोड़ लोगों को वैक्सीन की एक डोज तथा 5 करोड़ से अधिक लोगों को कोविड टीके की दोनों डोज का सुरक्षा कवच प्रदान करने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री योगी के लोक कल्याण की प्रतिज्ञा का ही सुफल है कि आज उत्तर प्रदेश अपने लोगों को उनके नजदीक ही उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की दिशा में सफलता हासिल कर रहा है। राजनीति, गोरखपीठ के संतों के लिए सिद्धि नहीं, बल्कि लोक-साधना का माध्यम है। उन्होंने राजनीति को लोक सेवा व कल्याण का माध्यम बनाया है। उत्तर प्रदेश के 24 करोड़ लोग इसे पूरी शिद्दत से महसूस भी कर रहे हैं।

कब मिलेगा देश को दलित खरबपति उद्योगपति भी

आर.के. सिन्हा

याद रख लें कि भारत अपने को पूर्ण रूप से विकसित होने का दावा उस दिन ही कर सकेगा जब हमारे यहां होंगे हजारों की संख्या में दलित उद्योगपति/ आंत्रप्योनर। हमारे यहां वैसे तो दलित राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री वगैरह बन ही चुके हैं। विज्ञान, शिक्षा, खेल वगैरह की दुनिया में भी दलित समाज से संबंध खने वाले नौजवान बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन, अभी भी हमें अरबपति-खरबपति दलित उद्यमियों के सामने आने का इंतजार है। अच्छी बात यह है कि दलित नौजवान कारोबार की दुनिया में अपने लिए अब जगह बनाने लगे हैं। उन्हें मोदी सरकार की खुली अर्थव्यवस्था में भरपूर अवसर मिल रहे हैं। वे उसका लाभ लेकर अब नौकरी मांगने के स्थान पर नौकरी देने लगे हैं। उम्मीद करनी चाहिए कि आने वाले समय में हमें कोई अरबपति दलित उद्यमी भी मिल ही जाएगा। वैसे यह सामान्य बात तो नहीं है। जिस समाज का सदियों तक शोषण ही हुआ हो उसने बिजनेस जैसे प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में अब अपनी इबारत लिखनी चालू कर दी। आगरा के रहने वाले रवीश पीपल उन दलित उद्यमियों में हैं जो नौजवानों के लिए प्रेरणा बन रहे हैं। वे रोजगार दे रहे हैं। रवीश फुटवियर बिजनेस से जुड़े हैं। उन्हें दुनिया भर की फुटवियर कंपनियां अपनी मांग के अनुसार माल बनाने का ऑर्डर देती हैं। रवीश पीपल भारत के फुटवियर उत्पादकों को डिजाइन, तकनीकी और मार्केटिंग की सलाह देते हुए उन कंपनियों को माल की सप्लाई करते हैं जहां से उन्हें ऑर्डर मिलता है। उनकी कंपनी में सभी जातियों के मुलाजिम हैं। वहां सिर्फ मेरिट के आधार पर नौकरी मिलती है।

यकीन मानिए कि दलित महिलाएं भी अब उद्यमी बन रही हैं। मुंबई की कल्पना सरोज का उदाहरण लीजिए। मुझे उनकी संघर्ष भरी कहानी बहुत प्रभावित करती है। वो कमानी ट्यूब्स की अध्यक्षा हैं। वे कहती हैं कि मोदी सरकार की उदार आर्थिक नीति से उन्हें लाभ मिला है। सरोज 1980 के दशक में अकोला से मुंबई आ गईं। तब तक आर्थिक उदारीकरण आने में कुछ साल शेष थे। सरोज मुंबई में दर्जी का काम करके रोजाना छोटी-सी रकम कमाने लगी। फिर उन्होंने बैंक लोन लेकर फर्नीचर की दुकान शुरू कर दी। यहां भी काम चला तो सरोज ने 1997 में मुंबई में एक जमीन खरीदी। साल 2000 में उन्होंने अपनी इमारत बेच दी। इससे उनकी छवि ऐसी महिला की बन गयी जो मुंबई में अपने दम पर कुछ कर सकती है। सरोज ने साल 2006 में ट्यूब बनाने वाली कंपनी कमानी ट्यूब की कमान संभाली, जो दिवालिया होने के कगार पर थी। अब उनकी कंपनी मुनाफा कमा रही है। दलित उद्यमियों की बिजनेस के संसार में सफलता का श्रेय आउटसोर्सिंग को दिया जा रहा है। इसके चलते उद्यमिता का विस्फोट हुआ है, जिसमें दलितों को भी लाभ हुआ है। खुदरा बाजार में एफडीआई का दलित उद्यमियों के उभरते वर्ग परह्व सकारात्मक असर हो रहा है। शिक्षित हो गए दलितों के लिए बिजनेस में अपार संभावनाएं लगातार बन रही हैं। सच्चाई तो यह है कि देश में सरकारी नौकरियां तेजी से हर वर्ष घटती जा रही है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में सभी जगह नौकरियां तेजी से घट रही हैं। दूसरी बात यह भी है कि जिन कारणों के चलते नौजवान सरकारी नौकरियों की तरफ आकर्षित होते थे, वह अब नहीं रहे। जैसे कि सरकारी नौकरियों में अब पेंशन नहीं रही। भ्रष्टाचार पर भी शिकंजा कसता जा रहा है। फिर किस बात के लिए इन्हें पाने को मारामारी की जाए। आज सरकारी नौकरियां भी काफी बड़े स्तर पर अनुबंध पर ही मिलती हैं। इस वजह से भी बहुत सारे नौजवान, जिनमें अधिकांश दलित-पिछड़े समाज से आते हैं, उन्होंने अपना कोई बिजनेस करने का मन बना लिया है। यह एक सुखद स्थिति है। बहुत सारे नौजवान आउट सोर्सिंग के जरिए भी ठीक-ठाक पैसा कमा रहे हैं। दलित नौजवानों को भी लग रहा है कि वे आरक्षण के सहारे पूरी जिंदगी तो नहीं गुजार सकते। इसलिए दलित नौजवानों ने स्वरोजगार की ठोस पहल की है। राजीव केन दलित समाज से आते हैं, जिन्हें लगा कि वे नौकरी के सहारे नहीं रह सकते। उन्होंने अपने बचपन में पिता के साथ मिलकर ईस्ट दिल्ली में स्कूटर मैकेनिक का काम किया है। कड़ी मेहनत और संघर्ष किया। इस काम में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद राजीव केन ने लंबी छलांग लगाई। उन्होंने नोएडा में इलेक्ट्रिक स्कूटर और मोटर साइकिल का निर्माण करने वाली इकाई स्थापित की। उन्हें इस बाबत आसानी से लोन मिल भी गया। अब उनकी कंपनी के देशभर में डीलर हैं। उनका कामकाज बेहतरीन ढंग से चल रहा है। वे मानते हैं कि पेट्रोल-डीजल की निरंतर बढ़ने वाली कीमतों को देखते हुए आने वाला समय इलेक्ट्रिक स्कूटर, मोटर साइकिल और कारों का ही होगा।

बाबा साहेब अंबेडकर के गृह प्रदेश महाराष्ट्र में हजारों दलित नौजवान सफल उद्यमी बन चुके हैं। उनका जीवन स्तर भी तेजी से बदल रहा है। वे सिर्फ नौकरी से लेकर शिक्षण संस्थानों में अपने लिए आरक्षण भर की ख्वाहिश नहीं रखते। वे बिजनेस की दुनिया में अपनी जगह बना रहे हैं। अफसोस कि उत्तर भारत के मायावती और अखिलेश यादव जैसे घनघोर जातिवादी नेता दलित और पिछड़ी जातियों से आने वाले युवाओं को आरक्षण जैसे सवालों में ही उलझा कर रखना चाहते हैं। हालांकि उनकी पकड़ भी अब कमजोर होती चली जा रही है। बेशक, कोई भी समाज जो कठिन दौर से गुजरता है, संघर्ष करता है, आगे चलकर तो तरक्की ही करता है। मारवाड़ियों को ही लें। ये राजस्थान-गुजरात की सूखी और बंजर धरती और मरुस्थल में पैदा हुए। अब देश के अनेकों बड़े उद्योगपति मारवाड़ी समाज से ही आते हैं। पारसियों को देखिए जो ईरान से भागकर आए, सिंधी जो सिंध छोड़कर आए। इन सबने विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष किया और संपन्न बने। देश विभाजन ने हजारों नौजवानों को आंत्रप्योनर बनाया था। पाकिस्तान से 1947 में भारत आ गए अनेकों हिन्दू और सिख नौजवानों ने नए-नए कारोबार चालू करके अपने लिए जगह बनाई थी। विपरीत हालात में इन्होंने हिम्मत नहीं हारी। इनमें से कई आगे चलकर ब्रजमोहन मुंजाल (हीरो ग्रुप), महाशय धर्मपाल गुलाटी (एमडीएच मसाले), रौनक सिंह (अपोलो टार्स), एचसी नंदा (एस्कोर्ट्स) बने। इन्होंने साबित किया कि वे विपरीत हालात में खड़े हो सकते हैं। अब दलितों का समय है, दलित व्यापार में अपनी क्षमताओं से आगे बढ़ रहे हैं। एक शेर से मैं अंत करना चाहूँगा- इस तरह तय की हैं हमने मंजिलें, गिर पड़े, गिरकर उठे, उठकर चले।

कैसे करें अनलॉकिंग को लॉक

भारत सरकार द्वारा उठाए गए कड़े कदमों और भारत में समय पर घोषित किए गए लॉकडाउन के कारण, हम कोरोना महामारी की पहली लहर से आसानी से निपटने में सक्षम रहे थे। हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका, यू.एस.एस.आर आदि जैसी महाशक्तियों को इस कोरोना महामारी से निपटने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था, भारत में समय पर लॉकडाउन ने भारत को इस जानलेवा महामारी के दुष्परिणामों को चखने से बचा लिया। प्रथम चरण में इस महामारी के बहुत छोटे असर के कारन कई लोगों ने लॉक डाउन पर ही सवाल उठाना शुरू कर दिया। यद्यपि भारत सरकार को कुछ और अवधि के लिए लॉक डाउन जारी रखना चाहिए था, तथापि भारतीय अर्थव्यवस्था की बिगड़ती स्थिति के कारण, अनलॉकिंग जल्दबाजी में किया गया था। लोगों के लिए, सी.ए.ए. का विरोध खुद को कोरोना महामारी से बचाने से ज्यादा महत्वपूर्ण था। कोरोना महामारी के खिलाफ आवाज उठाने और स्वयं के अस्तित्व को बचाने से ज्यादा महत्वपूर्ण नारे लगाना था।

और इसका दुष्परिणाम अपरिहार्य था और वो इस देश में हुआ भी । लोग अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेने के लिए बहुत जल्दी में थे। वे सरकार पर इस तरह आरोप लगा रहे थे मानो उन्हें बेवजह कैद करके रखा गया हो। नतीजा यह हुआ कि दूसरी लहर में भारतीयों ने भी जानलेवा कोरोना वायरस का स्वाद चखा। अभी कुछ महीने पहले की ही बात है कि किसी शहर में खुलेआम घूमना दूर की संभावना बन गया थी। देश में लगभग हर व्यक्ति ने कम से कम एक व्यक्ति को खोया हीं होगा, जिससे वह परिचित था। हर तरफ सिर्फ अस्पतालों के इमरजेंसी वाहनों की आवाज सुनाई दे रही थी। आखिर कोई भी सरकार इतनी बड़ी समस्याओं का समाधान स्वयं सुनिश्चित नहीं कर सकती। इस देश पर कोरोना का कितना विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। परन्तु ऐसा लगता है कि लोगों ने कोई सबक नहीं लिया है। कोरोनावायरस का ओमाइक्रोन संस्करण हाल ही में एक खतरा बना हुआ है। हमने यह अनलॉकिंग एक बड़ी कीमत पर हासिल की है। अब समय आ गया है कि इस अनलॉकिंग को हमेशा के लिए लॉक कर दिया जाए। इस कोरोनावायरस के ओमाइक्रोन नवीनतम संस्करण से लड़ने के लिए सरकार और लोगो को बड़े पैमाने पर एक साथ आना होना । अन्यथा, इस बात की पूरी संभावना है कि यह अनलॉकिंग फिर से अनलॉक हो जाएगी, और हमें अपने आप को फिर से अपने घर के अंदर बंद करने के लिए मजबूर हो जाना पड़ेगा।

–अजय अमिताभ

हरभजन सिंह क्रिकेट से लेंगे रिटायरमेंट

आईपीएल की बड़ी टीम में कोचिंग स्टाफ के रूप में होंगे शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह अगले साल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2022 में एक बड़ी टीम के साथ सपोर्ट स्टाफ के अहम सदस्य के रूप में नजर आएंगे। हरभजन ने आईपीएल 2021 के पहले चरण में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की ओर से कुछ मुकाबले खेले थे लेकिन यूएई लेग में एक भी मैच नहीं खेले थे। उम्मीद है कि हरभजन अगले हफ्ते क्रिकेट से आधिकारिक रूप से संन्यास की घोषणा करेंगे और इसके बाद उनके कुछ फ्रेंचाइजी के सपोर्ट स्टाफ से जुड़ने की पेशकश में से किसी एक को स्वीकार करने की उम्मीद है। आईपीएल के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर समाचार एजेंसी पीटीआई से कहा, 'यह भूमिका सलाहकार, मार्गदर्शक या सलाहकार समूह का हिस्सा बनने की हो सकती है लेकिन वह जिस फ्रेंचाइजी से बात कर रहा है वह उसके अनुभव का इस्तेमाल करना चाहती है। वह नीलामी में खिलाड़ियों को चुनने में भी फ्रेंचाइजी की मदद करने में सक्रिय भूमिका निभाएगा।' हरभजन ने हमेशा खिलाड़ियों को निखारने में रुचि दिखाई है और एक दशक तक मुंबई इंडियंस से जुड़े रहने के दौरान बाद के वर्षों में टीम के साथ उनकी यही भूमिका थी। पिछले साल केकेआर के साथ जुड़े रहने के दौरान हरभजन ने वरूण चक्रवर्ती का मार्गदर्शन करने में काफी समय बिताया। आईपीएल के पिछले सीजन की खोज रहे वेंकटेश अय्यर ने इससे पहले खुलासा किया था कि हरभजन ने केकेआर की ओर से उनके एक भी मैच नहीं खेलने से पहले कुछ नेट सत्र के बाद कहा था कि वह लीग में सफल रहेंगे।

यहां तक कि पिछले सीजन में केकेआर के मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम और कप्तान इयोन मोर्गन ने भी टीम चयन के मामलों में हरभजन की सलाह मानी थी। सूत्र ने कहा, 'हरभजन सत्र खत्म होने के बाद संन्यास की औपचारिक घोषणा करना चाहते हैं। एक फ्रेंचाइजी के साथ उसने बातचीत की है जिसने काफी रुचि दिखाई है लेकिन करार की औपचारिकता पूरी होने के बाद ही वह इस बारे में बात करना पसंद करेगा।

ऋतुराज गायकवाड़ को विजय हजारे ट्रॉफी में मिली बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली। आईपीएल 2021 में महेंद्र सिंह धोनी की टीम चेन्नई सुपर किंग्स के लिए ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करने वाले सलामी बल्लेबाज ऋतुराज गायकवाड़ को एक बड़ी जिम्मेदारी मिली है। गायकवाड़ को बुधवार से शुरू हो रहे विजय हजारे ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में महाराष्ट्र की कप्तानी सौंपी गई है। सीएसके का यह बल्लेबाज महाराष्ट्र की 20 सदस्यीय टीम की अगुवाई करेंगे। राज्य की चयन समिति ने राहुल त्रिपाठी को टीम का उपकप्तान नियुक्त किया है।

महाराष्ट्र की टीम ग्रुप डी में है, जिसके मैच राजकोट में खेले जाएंगे। इस ग्रुप में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, केरल, उत्तराखंड और चंडीगढ़ की टीमें भी है। महाराष्ट्र अपना पहला मैच बुधवार को मध्य प्रदेश के खिलाफ खेलेगा।

एशेज सीरीज की शुरूआत से पहले अपने स्वर्गीय पिता को याद करके भावुक हुए बेन स्टोक्स

नईदिल्ली। इंग्लैंड क्रिकेट टीम ने ब्रिसबेन में बुधवार से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली एशेज सीरीज के पहले टेस्ट मैच के लिए ऑलराउंडर बेन स्टोक्स को 12 सदस्यीय टीम में शामिल किया है। इनमें से मैच वाले दिन टॉस के बाद प्लेइंग इलेवन चुनी जाएगी। स्टोक्स ने इस साल की शुरूआत में क्रिकेट से ब्रेक ले लिया था। इंग्लैंड की टेस्ट टीम में चुने जाने के बाद स्टोक्स ने कहा है कि कुछ महीने पहले उन्होंने सोचा भी नहीं था कि वह फिर से टीम के लिए खेलेंगे। एशेज सीरीज 2021-22 की शुरूआत से ठीक एक साल पहले स्टोक्स के पिता गेड स्टोक्स का 65 साल की उम्र में लंबी बिमारी और कैंसर के कारण निधन हो गया था।

स्टोक्स ने एशेज सीरीज की पूर्वसंध्या पर अपने स्वर्गीय पिता को याद करते हुए सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट लिखा है। ऑलराउंडर स्टोक्स ने इंस्टाग्राम पर लिखा, ' कुछ महीने पहले मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं फिर से मैदान पर लौटूंगा। कल जब मैं मैदान पर उतरूंगा तो मेरे लिए यह एक आश्चर्यजनक होगा कि मैं आपको ठीक एक साल पर याद कर रहा हूं, जबसे आपने मुझे छोड़ा था। इस पूरे सप्ताह? आप मेरे साथ रहेंगे। स्टोक्स छह महीने के ब्रेक के बाद पिछले महीने क्वीन्सलैंड के गोल्ड कोस्ट के मेट्रिको स्टेडियम में पहली बार ट्रेनिंग सत्र के लिए इंग्लैंड की टीम के साथ जुड़े थे। स्टोक्स ने मानसिक स्वास्थ्य समस्यों और अंगुली की चोट से उबरने के लिए ब्रेक लिया था जिसके बाद इस ऑलराउंडर को देर से टीम में शामिल किया गया था।

साजिद खान की गेंदबाजी के दम पर पाकिस्तान ने बांग्लादेश को बैकफुट पर ढकेला, आखिरी दिन का खेल होगा रोमांचक

नई दिल्ली। बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच ढाका के शेर-ए-बांग्ला नैशनल स्टेडियम पर दो मैचों की सीरीज का आखिरी टेस्ट मैच खेला जा रहा है। सीरीज में 1-0 से आगे पाकिस्तान ने मेजबान टीम को पूरी तरह से बैकफुट पर ढकेल दिया है। साजिद खान ने छह बांग्लादेशी बल्लेबाजों को पवेलियन का रास्ता दिखाया, जिसके दम पर चौथे दिन का खेल खत्म होने तक बांग्लादेश ने पहली पारी में 76 रनों तक सात विकेट गंवा दिए। इस टेस्ट मैच के पहले चार दिन ज्यादा खेल नहीं हो सका, ऐसा लग रहा था कि यह टेस्ट आखिर में ड्रॉ पर ही खत्म होगा, लेकिन फिलहाल मैच पूरी तरह से मेहमान टीम के पक्ष में झुका हुआ नजर आ रहा है। पाकिस्तान ने चौथे दिन चार विकेट पर 300 रनों पर पहली पारी घोषित कर दी और जवाब में बांग्लादेश पर अब भी फॉलोऑन का खतरा मंडरा रहा है। बांग्लादेश को फॉलोऑन बचाने के लिए अभी भी 25 रनों की जरूरत है। शाकिब अल हसन 23 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं, जबकि ताइजुल इस्लाम बिना खाता खोले उनका साथ निभा रहे हैं। मैच के चौथे दिन कप्तान बाबर आजम 76 रन बनाकर आउट हुए, इसके बाद फवाद आलम ने नॉटआउट 50 और मोहम्मज रिजवान ने नॉटआउट 53 रनों की पारियां खेलीं।

आईपीएल 2022 में हो सकती है एजाज पटेल की एंट्री, कीवी स्पिनर ने कहा- मौका मिला तो जरूर खेलूंगा

नई दिल्ली। हाल में टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में 10 विकेट लेकर इतिहास रचने वाले भारतीय मूल के न्यूजीलैंड के स्पिनर एजाज पटेल का अगला लक्ष्य इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में खेलना है। कीवी स्पिनर ने कहा है कि अगर उन्हें मौका मिलता है कि दुनिया इस महंगी लीग में खेलने के लिए तैयार हैं। आईपीएल 2022 मेगा ऑक्शन में इस बार दो नई फ्रेंचाइजी आ रही हैं और ऐसे में एजाज को नई टीम में मौका मिल सकता है। एजाज ने हाल में मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में भारत के खिलाफ दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच की पहली पारी में सभी 10 विकेट चटकाए थे। वह ऐसा करने वाले दुनिया के तीसरे गेंदबाज बने थे। मुंबई में जन्मे एजाज ने एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा है कि उनके लिए आईपीएल में खेलना बहुत सौभाग्य की बात होगी। उन्होंने कहा, 'अगर मुझे आईपीएल में खेलने का मौका मिलता है तो मै जरूर खेलना चाहूंगा। भारत में ही नहीं पूरे विश्व में लोग आईपीएल को काफी पसंद करते हैं। ये एक अद्भुत टूर्नामेंट है। ये मेरे लिए बड़ी बात होगी अगर मुझे इस टूर्नामेंट में खेलने का मौका मिले। एजाज से पहले, 1956 में इंग्लैंड के स्पिनर जिम लेकर ने एशेज में ऑस्ट्रेलिया टीम के सारे 10 विकेट चटकाए थे। उनके बाद भारतीय स्पिनर अनिल कुंबले 1999 में पाकिस्तान के खिलाफ दिल्ली टेस्ट में एक पारी में 10 विकेट लिए थे। एजाज ने भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट में कुल 14 विकेट चटकाए।

आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ के लिए तीन खिलाड़ी हुए नॉमिनेट, लिस्ट में कोई भारतीय शामिल नहीं

नई दिल्ली। नवंबर महीने के लिए आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड के लिए तीन पुरुष और तीन महिला क्रिकेटरों को नॉमिनेट किया गया है। नवंबर महीने में टीम इंडिया ने न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की टी20 इंटरनैशनल सीरीज जीती और टेस्ट सीरीज पर 1-0 से कब्जा किया, लेकिन बावजूद नॉमिनेट खिलाड़ियों की लिस्ट में एक भी भारतीय खिलाड़ी शामिल नहीं है। मेंस क्रिकेट की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर, पाकिस्तान के सलामी बल्लेबाज आबिद अली और न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज टिम साउदी को नॉमिनेट किया गया है।

वॉर्नर ने टी20 वर्ल्ड कप में शानदार प्रदर्शन कर ऑस्ट्रेलिया को वर्ल्ड चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई, वहीं टिम साउदी ने टी20 वर्ल्ड कप के बाद भारतीय दौरे पर भी अपने प्रदर्शन से काफी प्रभावित किया। आबिद अली ने जब से टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू किया है, तब से करीब 50 की औसत से रन बनाए हैं। बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में उन्होंने अपनी बल्लेबाजी के दम पर पाकिस्तान को जीत दिलाई। महिला क्रिकेटरों की बात करें तो बांग्लादेश की नाहिदा अख्तर, पाकिस्तान की अनम अमीन और वेस्टइंडीज की हेले मैथ्यूज को इस अवॉर्ड के लिए नॉमिनेट किया गया है। महिलाओं के वर्ग में बांग्लादेश की नाहिदा ने इस दौरान चार वनडे में 13 विकेट झटके और महज 2.22 रन प्रति ओवर खर्च किए। अनम ने भी नवंबर में 13 विकेट लिए और तीन रन प्रति ओवर के हिसाब से रन खर्च किए। वेस्टइंडीज की ऑलराउंडर मैथ्यूज को दूसरी बार नॉमिनेट की गई हैं। वह इससे पहले जुलाई में अपनी कप्तान स्टैफनी टेलर के साथ नॉमिनेट हो चुकी हैं। उन्होंने नवंबर में चार वनडे मैचों में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए 141 रन बनाए और 13.11 की औसत से नौ विकेट हासिल किए।

बीएसए पर हमला सुनियोजित साजिश के तहत हुआ

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी। नाहिली स्कूल में बीएसए से की गई अभद्रता के विरोध में अनुसूचित जाति जनजाति बेसिक शिक्षक एसोसिएशन सामने आ गया है। मंगलवार को एसोसिएशन की बुद्ध विहार आजादनगर में बैठक हुई और घटना की निंदा कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की गई।

बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष धर्मवीर सिंह ने घटना को सुनियोजित हमला बताते हुए कहा कि ग्रामीणों तथा बच्चों की आड़ में स्कूल का माहौल खराब किया गया। मंडल अध्यक्ष रूपकिशोर, जिलाध्यक्ष सुधीर कठेरिया ने भी बीएसए कमल सिंह पर हुए हमले की निंदा की और कहा कि कार्रवाई नहीं हुई तो शिक्षकों का प्रतिनिधि मंडल उच्चाधिकारियों से मिलेगा। बैठक में महेंद्र भारती, विनोद गौतम, मुकेश कुमार, राकेश कुमार, धर्मेंद्र कठेरिया, प्रमोद रत्न, सतेंद्र कुमार, प्रवीन कुमार, विनोद कुमार, शैलेंद्र कुमार, चंद्रपाल, धीरज, हरेंद्र, नरेंद्र, मनोज कुमार, प्रदीप कुमार, जितेंद्र, सुनील कुमार, कमल प्रभाकर, सुभाषचंद्र, संजीव, प्रदीप चक, हरेंद्र कुमार, किरन, नीतू सिंह, गिरिराज आदि मौजूद रहे।

फांसी पर लटका मिला युवती का शव, मौत

मैनपुरी। कोतवाली क्षेत्र के एक मोहल्ले में 23 वर्षीय युवती की मौत हो गई। उसका शव फांसी पर लटका मिला। युवती को जिला अस्पताल में उसे मृत घोषित किया गया। युवती की मौत की खबर मिलते ही परिवारीजनों में कोहराम मच गया। पुलिस को जानकारी दिए बिना परिजन शव घर ले गए और गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार कर दिया गया। नगर के मोहल्ला राजा का बाग निवासी 23 वर्षीय प्रिया पुत्री रामसरन यादव को गंभीरावस्था में जिला अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया। युवती द्वारा फांसी लगाकर जान देने की बात सामने आयी है। मौत होने के बाद परिजन शव घर ले गए और अंतिम संस्कार कर दिया गया।

थाने के कंप्यूटर पर आधी रात को तैयार किया ट्रांसफर ऑर्डर

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी। नाहिली कंपोजिट स्कूल में हुए घटनाक्रम से समूचा शिक्षा विभाग शर्मशार है। लगातार 14 घंटे तक एक टीचर के साथ स्कूली बच्चे कमरे में कैद रहे। प्रशासन के खिलाफ नारे लगाए गए। इससे पहले बीएसए कमल सिंह पर हमला बोला गया। उनके कपड़े फाड़े गए। महकमे में इस घटनाक्रम की निंदा हो रही है। रात में ही मामले का पटाक्षेप करने के लिए थाने के कंप्यूटर पर शिक्षकों का ट्रांसफर आर्डर तैयार हुआ तब जाकर तनाव खत्म हो सका।थाने में हुई समझौता वार्ता के दौरान डीएम अविनाश कृष्ण सिंह और एसपी अशोक कुमार राय ग्रामीणों, बच्चों और शिक्षक राजेश की शर्तों से नाराज भी दिखे।

लेकिन अधिकारियों का पहला टारगेट बच्चों को सुरक्षित घरों पर भेजना था, जिसके चलते प्रशासनिक अमले को तनावपूर्ण माहौल के सामने घुटने टेकने पर विवश होना पड़ा। आधी रात को थाने में सजे डीएम के दरबार में कंप्यूटर पर सहायक अध्यापक महेंद्र प्रताप सिंह को उच्च प्राथमिक विद्यालय नगला बाग में ट्रांसफर किया गया तथा प्रधानाध्यापिका रुबीना इजहार को ब्लाक घिरोर स्थित प्राथमिक पाठशाला में भेज दिया गया।

14 घंटे का हाई वोल्टेज ड्रामा डीएम के हस्तक्षेप पर खत्म

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी। ग्राम नाहिली स्थित कंपोजिट स्कूल में 14 घंटे चले हाई वोल्टेज ड्रामे का रात ढाई बजे अंत हुआ तो जिला प्रशासन ने राहत की सांस ली। इससे पूर्व एडीएम, एसडीएम और तहसीलदार के खिलाफ ग्रामीणों ने रोष जाहिर किया। स्कूल टीचर और बच्चों का हंगामा बढ़ा तो रात 12 बजे डीएम एसपी के साथ घिरोर थाने पहुंचे और ढाई घंटे चली समझौता वार्ता के बाद मामले का हल निकाल लिया गया।

नाहिली स्कूल में शिक्षक राजेश यादव के समर्थन में लगभग 40 बच्चे पूर्वाह्न 11 बजे से लेकर रात 12 बजे तक स्कूल के कमरे में कैद बने रहे। सभी की मांग थी कि स्कूल के दूसरे शिक्षक महेंद्र प्रताप, प्रधानाध्यापिका रुबीना इजहार को स्कूल से हटाया जाए। शिक्षक राजेश के साथ बच्चे और ग्रामीण योगी सरकार जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे और प्रशासनिक अधिकारियों के लिए मुर्दाबाद की नारेबाजी हो रही थी। शिक्षक को एक बार पुलिस ने जबरन ले जाने की कोशिश की तो तनाव बढ़ गया। एडीएम स्तर से बात नहीं बनी तो रात 12 बजे डीएम अविनाश कृष्ण सिंह एसपी अशोक कुमार राय मौके पर पहुंच गए।

परीक्षा का केंद्र निर्धारण अब परिषद के पाले में, भेजी गई रिपोर्ट

भदोही। जिले में बोर्ड परीक्षा के लिए केंद्र निर्धारण की प्रक्रिया तेज हो गई है। जिला एवं ब्लॉक कमेटी का सत्यापन पूर्ण होने पर शिक्षा विभाग ने रिपोर्ट बोर्ड को भेज दी है। बोर्ड स्तर से ही केंद्रों पर मुहर लगेगी। जियो टैकिंग पूर्ण होने पर विभाग ने डॉटा लाक कर दिया है। केंद्र बनने के लिए 183 माध्यमिक और इंटर कॉलेजों ने आवेदन किया है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद की ओर से हर साल फरवरी-मार्च में हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की बोर्ड परीक्षा कराई जाती है। कोरोना संक्रमण के चलते 2021 में परीक्षा नहीं हो सकी थी। इससे हाईस्कूल, इंटरमीडिएट के छात्र-छात्राओं को प्रमोट किया गया। कोरोना की दूसरी लहर स्थिर होने के बाद स्कूलों में कक्षाएं शुरू हो गईं। 10 नवंबर तक माध्यमिक एवं इंटर कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की सूची बोर्ड से फाइनल हुई। इसमें हाईस्कूल में 26 हजार 111 और इंटरमीडिएट में 22 हजार 503 परीक्षार्थी शामिल होंगे। पिछले दिनों केंद्र निर्धारण के लिए 34 राजकीय, 25 वित्तपोषित और 120 से अधिक वित्तविहीन माध्यमिक एवं इंटर कॉलेजों से आधारभूत सूचना बोर्ड की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। इसकी जियो टैगिंग के सत्यापन के लिए जिला विद्यालय निरीक्षक एनएल गुप्ता ने ब्लॉक स्तरीय कमेटी गठित की। जांच पूर्ण होने पर विभागीय स्तर से ऑनलाइन सूची बोर्ड को भेज दी गई। इसमें स्कूल के भौतिक संसाधन शौचालय, बाउंड्री, सीसीटीवी कैमरा, वाइस रिकार्डर, बच्चों की संख्या, कक्ष संख्या सहित अन्य जरूरी जानकारी भी भेजी गई है। जिला विद्यालय निरीक्षक आधारभूत सूचनाएं अपलोड करने के साथ ही जियो टैगिंग का सत्यापन हो चुका है। 183 स्कूलों की रिपोर्ट आनलाइन सबमिट हो चुकी है। अब बोर्ड केंद्र का निर्धारण करेगा।

तीसरी बार फूंकी गई धान की फसल

अखंड भारत संदेश

भदोही। औराई थाना क्षेत्र के नरथुआ गांव में रविवार की रात तीसरी बार अराजक तत्वों ने दो किसानों के लगभग दो बीघे से अधिक खेत में रखी धान की फसल फूंक की। जानकारी होने पर किसानों के शोरगुल मचाते ही आग लगाने वाले अराजक तत्व भाग गए। पीड़ित किसान संतोष कुमार दुबे, लोलारखनाथ दुबे ने तहरीर देकर आरोप लगाया है कि खेत में फसल को काटकर सूखने के लिए छोड़ा गया था। फसल सूख भी गई थी जिसकी मड़ाई की तैयारी कर रहे थे। तब तक अराजक तत्वों ने फसल में आग लगाकर हजारों रुपये का नुकसान पहुंचा दिया।

किसानों ने कहा कि यह क्रम लगभग एक माह से चल रहा है और नरथुआ गांव में यह तीसरी बार की घटना है। पड़ोसी गांव सेउर समेत अन्य गांवों में फसल और पशुओं के लिए रखे पुआल के ढेर जला देने से अब तक दर्जन भर से अधिक किसानों को नुकसान पहुंचा है। पूर्व में ही शिकायतों के बाद भी पुलिस के हाथ फसल जलाने वालों तक नहीं पहुंच रहे हैं। पेशे अधिवक्ता और किसान संतोष दूबे की तहरीर पर पुलिस ने रात में ही मौके का निरीक्षण कर लौट आई। किसानों ने कहा कि गश्त बढ़ाकर पुलिस ने फसल जलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई और कृषि विभाग ने क्षतिपूर्ति की मांग पूरी करने में शिथिलता की तो किसान आगे की रणनीति तैयार करने के लिए मजबूर होंगे। प्रभारी निरीक्षण सदानंद सिंह ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है लेकिन अभी तक फसल जलाने वालों की पहचान नहीं हो सकी है।

अतिक्रमण के मामले में मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

भदोही। भमौरा के लेखपाल धर्मेंद्र सिंह की तहरीर पर औराई पुलिस ने सोमवार को जयरामपुर निवासी मोहम्मद गफूर और इसरार के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लेखपाल धर्मेंद्र सिंह ने कहा कि वह प्रभार में मिले जयरामपुर की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। मोहम्मद गफूर, इसरार को तालाब की जमीन पर अतिक्रमण करने पर नोटिस दी गई थी। बावजूद इसके अतिक्रमण नहीं हटाया गया। जबकि जिस जमीन पर अतिक्रमण होने की शिकायत ग्रामीणों ने की है वह जमीन खतौनी में तालाब के रूप में दर्ज है। नापजोख के समय सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न करने के आरोप में उक्त कार्रवाई कराई गई है। प्रभारी निरीक्षक सदानंद सिंह ने कहा कि लेखपाल की तहरीर पर जयरामपुर निवासी मोहम्मद गफूर, इसरार के खिलाफ सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर विवेचना की जा रही है।

एसडीएम को सौंपा छह सूत्रीय ज्ञापन, जब तक मांगे नहीं मानी जाती तब तक धरना जारी

अखंड भारत संदेश

किशनी। जनपद में किसानों की समस्याओं को लेकर भारतीय किसान यूनियन(किसान) ने फिर से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है।भा0कि0यू0 किसान के पदाधिकारी कई माह से जनपद के किसानों की समस्याओं को लेकर विभिन्न ज्ञापनों के माध्यम से मांग उठाते रहे है।पर प्रशासन ने हर बार सिर्फ कोरे वायदे ही किये। इससे आहत होकर सोमवार को भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी एक बार फिर से तहसील परिसर में धरने पर बैठ गए। जिलाध्यक्ष अनुरूद्ध दुबे ने एसडीएम जयप्रकाश को छह सूत्रीय ज्ञापन देकर बताया कि धान खरीद केंद्रों पर किसानों का धान नहीं खरीदा जा रहा है।यूरिया खाद 320 से 350 की बेची जा रही है।गौवंश किसानों की फसलें चट कर रहा है।माइनरों की सफाई नहीं की गई।किसानों की रबी की फसलें सूख रहीं हैं।निजी ट्यूबवेलों पर बिजली मात्र छह घंटे तक ही दी जाती है। उन्होंने कहा कि जबतक उक्त मांगें नहीं मानी जातीं वह शांतिपूर्वक धरने पर बैठे रहेंगे।उन्होंने चेतावनी दी कि अभी तो सिर्फ क्रमिक अनशन है।पर यदि प्रशासन ने उनके सब्र का ज्यादा इम्तिहान लिया तो वह अधिक बड़ी संख्या में किसानों के साथ बैठेंगे तथा रातदिन लगातार धरने पर ही जमे रहेंगे। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष शिवकांत दुबे,उमेश पाण्डेय,श्याम पाण्डेय, रमन यादव,बीटू यादव,राघवेंद्र चौहान,सोनू गुप्ता,अरविंद शाक्य,अनुरूद्ध यादव,सर्वेश यादव,रामबीर शाक्य,धर्मेंद्र शाक्य,विनोद शाक्य,प्रदीप सक्सेना एडवोकेट,नरेंद्र उर्फ रामवेटा त्रिवेदी, सुभाष यादव,गौरव दुबे,सोनू दुबे,उमाकांत पाण्डेय,लक्ष्मीकांत तिवारी,विशाल त्रिवेदी सहित एक सैकड़ा से अधिक किसान मौजूद रहे।

आजादी के बाद नहीं हुई जातिवार गणना

नई दिल्ली । संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा है। हालांकि राज्यसभा से 12 सांसदों के निलंबन को लेकर विपक्ष का शोर-शराबा जारी है। विपक्ष लगातार मोदी सरकार पर हमलावर हैं। लोकसभा और राज्यसभा दोनों में ही विपक्ष किसानों और नागालैंड मुद्दे को लेकर सरकार को घेर रहा है। कुल मिलाकर देखें तो संसद में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच लगातार गतिरोध कायम है। राज्यसभा में नेता विपक्ष खड़गे ने साफ तौर पर आरोप लगा दिया है कि संसद में पैदा हो रही अड़चनों के लिए सरकार ही जिम्मेदार है। वहीं, सरकार की ओर से निलंबित 12 सांसदों से लगातार माफी मांगने को कहा जा रहा है। केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने तो साफ तौर पर कह दिया है कि अगर वह आज भी माफी मांगते हैं तो हम निलंबन को वापस लेंगे।

सरकार ने लोकसभा को सूचित किया कि उसने जन्म और मृत्यु पंजीकरण अधिनियम में संशोधन का मसौदा तैयार किया है जिसके माध्यम से राज्यों में पंजीकरण के

पूर्वोत्तर से एएफएसपीए हटाने की उठी मांग

रिकॉर्ड को राष्ट्रीय स्तर पर आंकड़ों में शामिल करने का प्रावधान जोड़ा गया है। लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी के दो सदस्यों ने धर्मांतरण का मुद्दा उठाते हुए मांग की कि दूसरा धर्म अपनाने वाले लोगों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए। सदन में शून्यकाल में ही बीजू जनता दल के एक सांसद ने समान नागरिक संहिता को लागू करने की भी मांग उठाई।

भाजपा के निशिकांत दुबे ने झारखंड में धर्मांतरण के विषय को उठाते हुए कहा कि प्रलोभन देकर लोगों का धर्म परिवर्तन कराने का चलन बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 341 में कहा गया है कि अनुसूचित जाति (एससी) के लोग यदि धर्म परिवर्तन करेंगे तो उनका आरक्षण समाप्त हो जाएगा, इस कारण से एससी वर्ग धर्मांतरण से बचा हुआ है।

भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने पशुओं के खिलाफ क्रूरता को रोकने के लिए सख्त कानूनी प्रावधान की मांग करते हुए लोकसभा में कहा कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 में जरूरी संशोधन किए जाएं। सरकार ने मंगलवार को बताया कि देश में आजादी के बाद से जनगणना में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के अलावा अन्य जातिवार गणना नहीं की गई है। केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने कहा कि जातियों एवं जनजातियों को समय-समय पर यथा संशोधित (अनुसूचित जाति) आदेश 1950 तथा संविधान अनुसूचित जनजाति आदेश 1950 के तहत विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है और इनकी एक दशक में होने वाली जनगणना में गिनती की जाती है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार ने आजादी के बाद से जनगणना में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के अलावा अन्य जातिवार गणना नहीं की है। निलंबित 12 सदस्यों का निलंबन वापस लिए जाने की मांग कर रहे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गोरखपुर में जनता को खाद कारखाना और एम्स का दिया तोहफा

गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नागरिक सेवाओं और विभिन्नि विकास परियोजनाओं के लोकार्पण के लिये आज गोरखपुर पहुंच गये। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और राज्य के मुख्यमत्री योगी आदत्यिनाथ ने गोरखपुर हवाईअड्डे पर प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया। मोदी गोरखपुर में हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड के उर्वरक कारखाने और अखिल भारतीय आयुर्वज्ञिान संस्थान (एम्स) सहित कुल 9600 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की विकास की कुछ अन्य परियोजनायें राष्ट्र को समर्पित किया।गौरतलब है कि एम्स की अनुमोदित लागत 1,011 करोड़ रुपए है। इसकी स्थापना 112 एकड़ क्षेत्र में की जा रही है। इस उच्चस्तरीय विशेषज्ञ चिकत्सिा संस्थान के माध्यम से मरीजों को उत्कृष्ट चिकत्सिा सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएंगी। इसके अलावा गोरखपुर में स्थापित किए जा रहे भारतीय चिकत्सिा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के रीजनल मेडिकल रिसर्च सेण्टर, इंसेफेलाइटिस, डेंगू, चिकुनगुनिया, कालाजार सहित कोविड-19 जैसी बीमारी के वायरस की पहचान करने तथा उसके उपचार के लिए अनुसंधान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 15 दिसंबर से, कई अहम घोषणाएं कर सकती है योगी सरकार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 15 दिसंबर से शुरू होगा। विधानसभा चुनाव के मद्देनजर योगी सरकार अगले वित्तीय वर्ष के लिए पूर्ण बजट लाने के बजाए चार महीने का लेखानुदान इस सत्र में पास कराएगी। साथ ही वर्तमान वित्तीय वर्ष का दूसरा अनुपूरक बजट लाया जा सकता है। खास बात यह है कि मौजूदा 17 वीं विधानसभा का यह संभवतः आखिरी सत्र है। इसमें सरकार कई महत्वपूर्ण घोषणाएं भी कर सकती है। अभी सत्र का कार्यक्रम तय होना है। इसी सत्र के बीच योगी सरकार की कैबिनेट बैठक वाराणसी में 16 दिसंबर को प्रस्तावित है। काशी विश्वननाथ मंदिर कारीडोर के लोकार्पण की तैयारियों व अन्य आयोजनों की समीक्षा के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ वहां कई दिन प्रवास करेंगे।

विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच प्रदेश सरकार ने लेखानुदान तैयार भी कर लिया है। जुलाई तक के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले लेखानुदान का आकार करीब पौने दो लाख करोड़ रुपये का हो सकता है। सरकार चालू वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए दूसरा अनुपूरक बजट भी ला सकती है। लेखानुदान के तहत नये वित्तीय वर्ष में जुलाई माह तक के लिए जरूरी खर्चों के लिए बजट का प्रारूप तैयार कर लिया है। बताया जा रहा है कि सरकार लेखानुदान इसी 15 दिसंबर को सदन में प्रस्तुत कर सकती है। अनुपूरक के माध्यम से एक्सप्रेस-वे और जेवर एयरपोर्ट के लिए और धनराशि का आवंटन होगा। मथुरा के पर्यटन व धार्मिक विकास के मद में भी सरकार कोई नई घोषणा कर सकती है। हाल के दिनों में राजनीतिक हल्के में काशी, अयोध्या के बाद मथुरा की चचाएं होने से मथुरा के लिए अनुपूरक से कुछ खास देने का इंतजाम करने का अनुमान लगाया जा रहा है। स्कालरशिप के मद में भी और बजट का इंतजाम अनुपूरक के माध्यम से किए जाने की उम्मीद है।

बरेलीः बीएल एग्रो कंपनी में हादसा, टैंक की सफाई करते समय तीन मजदूरों की मौत, चार बेहोश

बरेली। बरेली शहर के सीबीगंज इलाके स्थित बीएल एग्रो की जौहरपुर इकाई में मंगलवार को जहरीली गैस की चपेट में आने से तीन मजदूरों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य मजदूर बेहोश हो गया। यूनिट में यह हादसा टैंक की सफाई के दौरान हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। बरेली के अपर जिलाधिकारी (नगर) राम दुलारे पांडे ने बताया कि बीएल एग्रो की जौहरपुर यूनिट स्थित टैंक की सफाई करने के लिए तीन मजदूर टैंक में उतरे। लेकिन काफी समय बाद भी बाहर नहीं आने पर एक अन्य मजदूर को उन्हें देखने के लिए भेजा गया। उन्होंने बताया कि बाद में किसी तरह से चारों मजदूरों को टैंक से बाहर निकाला गया।

देश में लगातार बढ़ रहे ओमिक्रॉन मामले, दस मामले आए सामने

नई दिल्ली। भारत में कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रोन के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। मंगलवार को महाराष्ट्र के पुणे शहर में ओमिक्रोन के दस और नए मामले सामने आए हैं। पुणे के एक शीर्ष अधिकारी ने जानकारी दी कि हवाई अड्डे पर लगभग 30 हजार यात्रियों का कोरोना टेस्ट किया गया। इनमें से दस लोगों में ओमिक्रोन की रिपोर्ट पाजिटिव आई है। इसके पहले सोमवार को मुंबई में ओमिक्रोन वैरिएंट के दो मामले सामने आए थे। महाराष्ट्र में इस वैरिएंट से संक्रमित लोगों की कुल संख्या अब 20 हो गई है। देशभर में ओमिक्रोन से संक्रमितों की कुल संख्या 33 हो गई है, जिनमें से महाराष्ट्र में 20, राजस्थान में नौ, दिल्ली में एक, गुजरात में एक और कर्नाटक में दो मामले सामने चुके हैं। देश में बीते 24 घंटों के अंदर आज साढ़े छह हजार से ज्यादा मामले सामने आए

हैं। इस दौरान 220 कोरोना संक्रमितों की मौत हुई है।

इस बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री असलम शेख ने बताया कि मुंबई को हाई अलर्ट पर रखा गया है। जो लोग बाहर से आ रहे हैं उन्हें क्वारंटाइन करने के लिए कोविड सेंटर तैयार किए गए हैं। साथ ही 20 होटल भी हैं जहां वो रह सकते हैं। सभी अस्पतालों और कोविड सेंटरों में भी आक्सीजन की व्यवस्था की गई है। ओमिक्रोन वैरिएंट से दहशत के बीच देश में कोरोना महामारी को लेकर कुछ सुकून देने वाली खबर मिली है। 558 दिन यानी डेढ़ साल बाद कोरोना संक्रमण के नए मामले सबसे कम 6,822 सामने आए हैं जिसमें से अकेले केरल से ही 3,277 केस हैं। सक्रिय मामलों में भी करीब साढ़े तीन हजार की गिरावट दर्ज की गई है। हालांकि, देश में ओमिक्रोन के पहले दो मरीजों में से एक बेंगलुरु के डाक्टर की कोरोना जांच रिपोर्ट फिर पाजिटिव आई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से मंगलवार सुबह आठ बजे अपडेट किए गए आंकड़ों के मुताबिक सक्रिय मामलों की घटकर 95,014 रह गई है जो कुल मामलों का 0.27 फीसद है। कोरोना महामारी की वजह से 220 लोगों की जान भी गई है, इसमें भी 168 मौतें अकेले केरल से हैं। बृहद बेंगलुरु महानगर पालिका के अधिकारियों ने बताया कि ओमिक्रोन से संक्रमित पाए गए डाक्टर को क्वारंटाइन में रखा गया है। डाक्टर के साथ गुजराती मूल के जिस दक्षिण अफ्रीकी नागरिक को ओमिक्रोन से संक्रमित पाया गया था वह प्रशासन को बताए बिना विदेश चला गया है, इस मामले में संबंधित लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।

संयुक्त रैली में भाजपा पर बरसे अखिलेश-जयंत, बोले- लाल का इंकलाब होगा, 2022 में बदलाव होगा

मेरठ। उत्तर प्रदेश में अगले साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में तमाम पार्टियां मतदाताओं को लुभाने की कोशिश कर रही हैं। इसी बीच समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव, राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) नेता जयंत चौधरी ने मेरठ में मंगलवार को संयुक्त रैली की। इस दौरान दोनों नेताओं ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जमकर निशाना साधा। जयंत चौधरी ने कहा कि हम लोग लखीमपुर की घटना को भूल नहीं सकते हैं कि किस तरह से किसानों को रौंदा गया था। 700 से ज्यादा किसान शहीद हो गए। पहले मैंने घोषणा की थी कि रालोद अपनी जमीन देगी और शहीद किसानों के बलिदान में स्मारक बनाएंगे।

उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार का देखा आपने क्या हाल है, बिजनौर में विधायक ने नारियल फोड़ा, सड़क टूट गई। जयंत चौधरी ने कहा कि आज इसी मंच से मैं गठबंधन का एलान करता हूं, यह डबल इंजन की सरकार आएगी और प्रदेश को नए आयाम तक ले जाएगी। उन्होंने कहा कि एक साथ किसानों पर वार हुआ, किसानों का अपमान हुआ। लेकिन

भाजपा के किसी भी नेता की एक शब्द बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

वहीं सपा प्रमुख ने एक ट्वीट में लिखा कि भाजपा के लिए रेड एलर्ट है महंगाई का, बेरोजगारी-बेकारी का, किसान-मजदूर की बदहाली का, हाथरस, लखीमपुर, महिला व युवा उत्पीड़न का, बर्बाद शिक्षा, व्यापार व स्वास्थ्य का और लाल टोपी का क्योंकि वो ही इस बार भाजपा को सत्ता से बाहर करेगी। लाल का इंकलाब होगा, बाइस में बदलाव होगा! अखिलेश यादव ने कहा कि यह मैदान भर गया है और अभी भी लोगों का आना जारी है, इस भव्य और शानदार रैली के लिए मैं राष्ट्रीय लोकदल और समाजवादी पार्टी के सभी कार्यकताओं के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

मायावती ने बनाया 86 सीटों को जीतने के लिए खास प्लान

लखनऊ। बसपा प्रदेश की सुरक्षित 86 सीटों पर जीत के लिए बुधवार से अभियान की शुरूआत करने जा रही है। इन सीटों पर आगड़ों और ब्राह्मणों को जोड़ने की जिम्मेदारी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्र को सौंपी गई है। इसके पहले मायावती इन सभी सुरक्षित सीटों के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर रणनीति बना चुकी हैं। मायावती का मनना है कि सर्वाधिक सुरक्षित सीटें जीतने वाले की सत्ता की राह आसान हो जाती है। बसपा के पास अपना कॉडर वोट बैंक हैं। इस वोट बैंक के साथ जाट, मुस्लिम और ब्राह्मणों को जोड़ने का काम शुरू किया गया है। राष्ट्रीय महासचिव सभी सुरक्षित सीटों पर मंडलीय सभाएं करेंगे। पहली सभा बुधवार को रामपुर मनिहारन सहारनपुर में होगी।

नहीं थम रहा राजद्रोह कानून का इस्तेमाल

नई दिल्ली। असम में एक न्यूज वेबसाइट पर प्रकाशित लेख के कारण एक पत्रकार पर देशद्रोह का मामला दर्ज हुआ है. भारत की सर्वोच्च अदालत बार बार देशद्रोह का मामला बनाने पर सवाल खड़े कर चुकी है, लेकिन सरकारें ऐसा करने से बाज नहीं आ रही हैं.इस साल जुलाई में सुप्रीम कोर्ट ने राजद्रोह कानून के दुरुपयोग पर गहरी चिंता जताते हुए केंद्र सरकार से इसे जारी रखने के औचित्य पर सवाल पूछा था. उससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने वरिष्ठ पत्रकार विनोद दुआ के खिलाफ दर्ज राजद्रोह का मामला रद्द करने का आदेश दिया था. लेकिन बावजूद इसके केंद्र और राज्य सरकारें लगातार इस कानून को अपने हित में इस्तेमाल करती रही हैं. ताजा मामले में असम की बराक घाटी में एक स्थानीय समाचार पोर्टल पर छपे एक संपादकीय के लिए संपादक के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया है।

हालांकि गिरफ्तारी के बाद उनको निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया है. लेकिन इस मामले ने पूर्वोत्तर में पत्रकारों के उत्पीड़न के बढ़ते मामलों पर नई बहस छेड़ दी है. ताजा मामला असम के सिलचर स्थित एक पत्रकार के खिलाफ कथित आपत्तिजनक लेख के चलते बीते शनिवार को भारतीय दंड संहिता की धारा 124 ए (राजद्रोह) सहित कई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था. राज्य के कछार जिले में ह्यबराक बुलेटिन' नामक न्यूज पोर्टल चलाने वाले पत्रकार अनिर्बाण रॉय चौधरी को कछार पुलिस ने समन भेजा था. सिलचर निवासी शांतनु सूत्रधर नामक व्यक्ति की शिकायत के आधार पर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है. बीते एक दिसंबर को दायर सूत्रधर की शिकायत में आरोप लगाया गया था कि चौधरी के लेख के कारण असम के बंगाली और असमिया के लोगों का आपसी भाईचारा बिगड़ सकता है. अनिर्बाण को सोमवार को थाने में बुलाया गया था। इस मामले में गिरफ्तारी के बाद उनको निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया है. पूर्वोत्तर में पत्रकारों के उत्पीड़न का यह पहला या आखिरी मामला नहीं है।

एंजेला मर्केल की विदाई के साथ एक युग का अंत, अब शोल्ज संभालेंगे कामकाज

बर्लिन। जर्मनी की निवर्तमान चांसलर एंजेला मर्केल भले ही सत्ता से दूर होने वाली हैं, लेकिन 16 साल के अपने कार्यकाल में उन्होंने इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करा लिया है।

मर्केल, 22 नवंबर 2005 को जर्मनी की चांसलर बनने वाली पहली महिला थीं। अपने रेकॉर्ड कार्यकाल में मर्केल (67) ने विदेशों में सराहना और देश में काफी लोकप्रियता हासिल की। उनके नामित उत्तराधिकारी ओलाफ शोल्ज के बुधवार को पदभार ग्रहण करने की उम्मीद है। शोल्ज निवर्तमान वित्त मंत्री एवं वाइस चांसलर हैं। पूर्व वैज्ञानिक मार्केल कम्युनिस्ट विचारधारा वाले पूर्वी जर्मनी में पली-बढ़ीं। सबसे अधिक समय तक पद पर बने रहने के अपने संरक्षक, हेल्मुट

कोहल के रिकॉर्ड को वह नहीं तोड़ेंगी, क्योंकि वह उनके रिकॉर्ड समय से करीब एक सप्ताह पहले ही पद छोड़ देंगी।

कोहल ने 1982-1998 के अपने कार्यकाल के दौरान जर्मनी को फिर से जोड़ा था। मर्केल ने अपने कार्यकाल में चार अमेरिकी राष्ट्रपतियों, चार फ्रांसीसी राष्ट्रपतियों, पांच ब्रिटिश प्रधानमंत्रियों और आठ इतालवी प्रधानमंत्रियों के साथ काम किया। अपने कार्यकाल में उन्होंने चार प्रमुख चुनौतियों - वैश्विक वित्तीय संकट, यूरोप का ऋण संकट, 2015-16 में यूरोप में शरणार्थियों की आमद और कोविड-19 वैश्विक महामारी का सामना किया।

यूक्रेन के रक्षा मंत्री की धमकी, कहा- मॉस्को ने हमला किया तो होगा नरसंहार, ताबूत में जाएंगे रूसी

नईदिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच जारी तनाव के बीच यूक्रेन के रक्षा मंत्री ने मॉस्को को धमकी दी है। यूक्रेन के रक्षा मंत्री ओलेक्सी रेजनिकोव ने सीएनएन से बातचीत में कहा है कि अगर रूस यूक्रेन पर हमला करता है तो वाकई नरसंहार होगा। उन्होंने कहा है कि अगर मॉस्को हमला करता है तो रूसी ताबूत में वापस जाएंगे। ओलेक्सी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से मॉस्को के खिलाफ मजबूती से खड़े रहने की अपील की है। बता दें कि यूक्रेन मसले को लेकर जल्द ही रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन वीडियो कॉन्फ्रेंस करने वाले हैं। अमेरिका सहित यूरोपीय देशों ने यूक्रेन बॉर्डर पर रूसी सैनिकों के जमावड़े पर सवाल उठाए हैं। पिछले हफ्ते अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा था कि हम हर तरह की अनिश्चित घटनाओं के लिए तैयार हैं। रेजनिकोव ने कहा है कि यूक्रेन का आकलन है कि रूस ने बॉर्डर पर 95 हजार सैनिक

तैनात किए हैं। हालांकि यूक्रेन की ताकत के कारण अमेरिका का अनुमान है कि रूस यूक्रेन पर आक्रमण करने के लिए 1.75 लाख सैनिकों को जमा कर सकता है। लेकिन हमारे पास 2.5 लाख अधिकारी हैं...हमारी सेना के सदस्य। 2 लाख रिजर्व हैं और 4 लाख दिग्गज। 1.75 लाख सैनिक यूक्रेन का मुकाबला नहीं कर सकते।

रेजनिकोव ने कहा है कि अगर रूस आक्रमण करता है तो इसका पूरे यूरोप पर विनाशकारी प्रभाव होगा। 40-50 लाख यूक्रेन के लोगों को यूरोप में जगह लेनी पड़ सकती है। हमने अपने सहयोगियों से सैन्य उपकरण को लेकर अपील की है। हमें सैनिकों की जरूरत नहीं है क्योंकि मुझे नहीं लगता है कि यह उचित है कि यूक्रेन में अमेरिकी सैनिक मारे जाएं। हालांकि रूस ने यूक्रेन पर किसी भी तरह के हमले की योजना से इनकार किया है। रूस ने कहा है कि यूक्रेन को नाटो सदस्य बनाना मॉस्को को मंजूर नहीं है। इससे रूस के बॉर्डर पर खतरा हो सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक क्रेमलिन एक कानूनी प्रतिबद्धता की मांग कर रहा है कि यूक्रेन को शामिल करने के लिए नाटो का विस्तार पूर्व की ओर नहीं किया जाए और यूक्रेन में मिसाइल सिस्टम जैसे नाटो सैन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण नहीं किया जाए।

अखंड भारत संदेश के लिए (स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति) क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूसी प्रयागराज उत्तर प्रदेश 211019 से प्रकाशित एवं विपिन इंटरप्राइजेज 1/6C माधवकुंज, कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक

प्रकाशक स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति पी.आर.बी .एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदाई। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

UPHIN **29506**